Murakh Raj 18

मूर्खराज

[हास्यरस की अपूर्व पुस्तक]

लेखक—

Parrasilal

श्री० प्रवासीलाल जी वर्मा

प्रकाशक—

'चाँद' कार्यालय

इलाहाबाद

chand karayalay Allhabad

दिसम्बर, १९२८ 1927

थम बार, २०००]

[मूल्य २)

Sri Pratap Singh
Public Library
Srinagar.

FIRST EDITION
Two Thousand Copies

Printed and Published
by
R. SAIGAL
at
The Fine Art Printing Cottage
28, Elgin Road
Allahabad

December
1928

78

पुस्तक

Janki Nath Tiku

Srinagar

Kashmir

5762.

193

दो शब्द

बम्बई का "गुजराती प्रेस" अनेक उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए विख्यात है। प्रेस के मालिक स्वर्गीय सूर्यराम इच्छाराम देसाई स्वतः एक सत्साहित्यिक थे। आपकी लिखी अनेक उत्तमोत्तम पुस्तकें, गुजराती-साहित्य की श्री-वृद्धि कर रही हैं। आपने गुजराती के साथ-साथ संस्कृत के भी उत्तमोत्तम और आवश्यकीय प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन किया था। आपके यहाँ की अनेक पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है। कुछ वर्ष हुए, तब आपके यहाँ से प्रकाशित "मूर्खों" नामक पुस्तक पढ़ने का मुझे अवसर मिला था। पुस्तक आद्यन्त मूर्खता की बातों से पूर्ण है, जिन्हें पढ़कर कभी क्रोध आता, कभी आश्चर्य होता और अधिकांश पेट पकड़ कर हँसना पड़ता है। शिक्षा भी ख़ासी मिलती है। गुजराती में इस पुस्तक के सात संस्करण हो गए हैं। पुस्तक की लोक-प्रियता का यह ख़ासा प्रमाण है। पुस्तक मुझे भी ख़ूब पसन्द आई। हिन्दी में इस ढङ्ग की एक भी पुस्तक नहीं है। मैंने विचार

किया कि इसे हिन्दी-समाज की रुचि के अनुसार लिखा जाय। फल-स्वरूप "मूर्खराज" के नाम से इसे आज आपके सामने उपस्थित कर रहा हूँ। यदि इससे दो-चार घड़ी आपका दिल बहला, तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

श्रावण शुक्ला १,
सम्वत् १९८५ वि०

—प्रवासीलाल वर्मा

18

विषय सूची

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
१	परिचय	१
२	मूर्खराज और ग्राम	२
३	चाचा का पत्र	५
४	मूर्खराज का हठ	६
५	वृक्ष की डाली	१३
६	मैं कब मरूँगा ?	१५
७	मूर्खराज की विचार-तरङ्ग	१७
८	भेड़ों के टोले में	१६
९	मूर्खराज का भाग्य	२१
१०	मूर्खराज के विवाह की बात	२४
११	मूर्खराज का विवाह	२७
१२	गौना	२६
१३	रात-बासा	३१
१४	बेचारा ग़रीब	३२
१५	चिड़ीमार का जाल	३३
१६	ऐसा किसी के यहाँ न हो	३५
१७	ऐसा सबके यहाँ हो	३५
१८	जले को शान्त करना	३७
१९	जलते को जलाना	३६
२०	स्त्री विधवा होगई	४०

क्रमाङ्क विषय			पृष्ठ
२१—तू विधवा कैसे हो गई ?	...	...	४१
२२—सेठ के साले	...	...	४३
२३—ख़रबूज़े का घाव	...	...	४४
२४—जितना दे उतना न लाना	...	...	४७
२५—पात्र में घी है या घी में पात्र ?		...	४६
२६—गाड़ी रोती है	...	...	५१
२७—गाड़ी की मृत्यु	...	...	५२
२८—स्त्री का क्रोध	...	...	५४
२९—मुनीम की जगह मूर्खराज	...	...	५७
३०—मुनीम जी की बुद्धिमानी	...	...	५९
३१—चम्पा का विवाह	...	...	६२
३२—बीस बरस के बदले	...	...	६४
३३—दस-दस बरस के दो	...	...	६७
३४—बुद्धिमती की बीमारी	...	...	६८
३५—रस्सी थामकर बैठना	...	...	६९
३६—बुढ़िया की मृत्यु	...	...	७२
३७—मूर्खराज का रोना	...	...	७४
३८—गाँव की सैर	...	...	७६
३९—सिर के पास पोटली	...	...	७८
४०—हीरा या मिश्री ?	...	...	७९
४१—बहिन मर गई	...	...	८१
४२—घर मर गया	...	...	८२
४३—राज-दरबार में	...	...	८३
४४—मूर्खों के सरदार	...	...	८५
४५—मटके में भैंस	...	...	८८
४६—मूर्खराज की सवारी	...	...	९०
४७—राज-दरबार में मूर्खराज़	...	...	९२

क्रमाङ्क विषय			पृष्ठ
४८—न्यायाधीश के पद पर	...	...	९४
४९—मूर्खराज का न्याय	...	...	९६
५०—राजा को फाँसी	...	...	९९
५१—महँगा माल	...	...	१०१
५२—महँगे प्याज़	...	...	१०३
५३—पाँच रुपए का एक प्याज़	...	...	१०४
५४—बग़ैर तनख़्वाह की नौकरी	...	...	१०७
५५—इनाम में गोबर	...	...	११०
५६—मूर्खराज किसान बने	...	...	११२
५७—लगान की वसूली	...	...	११४
५८—जूते या प्याज़ ?	...	...	११५
५९—मूर्खराज की नौकरी	...	...	११७
६०—दुशाला ...	...	...	११८
६१—दुशाले में लीद	...	...	१२०
६२—बालक की धुलाई	...	...	१२२
६३—जयसिंह का मूसल	...	...	१२४
६४—अनार के लिए पिटे	...	...	१३०
६५—सबसे अच्छी चोरी	...	...	१३२
६६—हलुवा बनाने लगे	...	...	१३४
६७—ऊपर वाला जाने	...	...	१३६
६८—अक़्लमन्द नवाब	...	...	१३८
६९—कान लगा के सुनना	...	...	१४०
७०—जैसा कहोगे, करूँगा	...	...	१४१
७१—भेड़ों की चोरी	...	...	१४३
७२—मक्खन-रोटी	...	...	१४५
७३—मूर्खराज और बैल	...	...	१४७
७४—चुप न बैठना	...	...	१५०

क्रमाङ्क विषय			पृष्ठ
७५—मेहतर के यहाँ चोरी	...	...	१५३
७६—मूर्खराज कुएँ में	...	...	१५५
७७—कुएँ में भूत	...	...	१५७
७८—मूर्खराज का अर्थशास्त्र	...	...	१६०
७९—आमों का खाद	...	...	१६१
८०—राजा के इन्साफ़ का इन्साफ़...		...	१६४
८१—राजा की नौकरी	...	...	१६६
८२—नौकरी का स्वप्न	...	...	१६७
८३—चुङ्गी ...	...	...	१[illegible]
८४—मूर्खराज की सफ़ाई	...	...	१६९
८५—मूर्खराज का विवाह	...	...	१७१
८६—मूर्खराज की गृहस्थी	...	...	१७[illegible]
८७—मूर्खराज का क्रोध	...	...	१७५
८८—औरत के पैर दाबे	...	...	१७७
८९—प्रेम का बदला मार	...	...	१७९
९०—बालक की चाह	...	...	१८२
९१—मन्नत ...	...	...	१८४
९२—मन्नत पूरी हुई	...	...	१८५

चिड़ीमार का जाल

सुबह होते ही मूर्खराज अपनी ससुराल की ओर चले। एक जगह चिड़ीमार ने पक्षी पकड़ने के लिए अपना जाल बिछा रक्खा था। दुर्भाग्य से मूर्खराज उधर ही जा निकले और चुपचाप चले जाने के बजाय अपने ऊँचे स्वर में एक गीत अलापना शुरू किया। भर्र से सब पक्षी उड़ गए। चिड़ीमार के गुस्से का ठिकाना नहीं था। उसने मूर्खराज को पकड़कर रूई की तरह धुन डाला। कहा—नालायक़ कहीं का, दिन भर की मिहनत चौपट कर डाली। जैसे एक फँसा है वैसे ही दूसरा फँसता, तीसरा फँसता, चौथा फँसता, मेरी मिहनत सफल हो जाती। सब मिट्टी कर दिया गधे ने।

आख़िर मार-पीट कर चिड़ीमार ने मूर्खराज को भगा दिया। वे एक ओर चल दिए। चलते-चलते वे एक गाँव के निकट पहुँचे। दुर्भाग्य से गाँव के ज़मींदार के लड़के को पुलिस बिना अपराध गिरफ़्तार करके लिए जा रही थी। इसी समय आपको चिड़ीमार का वह मन्त्र याद आ गया—जैसे एक फँसा है, दूसरा फँसता, तीसरा फँसता, चौथा फँसता, मैं ख़ुश होता, मेरी मिहनत सफल होती।

गाँव के लोग नम्बरदार से बड़ा प्रेम रखते थे, इसलिए सब पुलिस वालों के पास इकट्ठे होकर लड़के को छुड़ाने के प्रयत्न में थे। मूर्खराज की बात सुनकर वे बिगड़ पड़े और

खूब मरम्मत करके कहा—मूर्ख कहीं का, कहता है कि दूसरा फँसता, तीसरा फँसता, चौथा फँसता तो खुश होता, बतला तो तेरे दादा का क्या बिगाड़ा है ? जबान काट लेंगे यदि फिर ऐसा कहा। ऐसा कह कि "ऐसा किसी के यहाँ न होवे" समझा !

ऐसा किसी के यहाँ न हो

मूर्खराज कुट-पिट कर रोते-कलपते आगे बढ़े। अब आप यह मन्त्र याद करते हुए जा रहे थे—"ऐसा किसी के यहाँ न हो, ऐसा किसी के यहाँ न हो।" ससुराल का रास्ता गाँव में होकर था, और गाँव में साहूकार के लड़के का ब्याह हो रहा था। आप मारे डर के ज़ोर-ज़ोर से अपना मन्त्र याद करते जा रहे थे। साहूकार के नौकरों और हितचिन्तकों ने सुना, तो मूर्खराज का ख़ासा इलाज किया, और समझाया—ख़बरदार, ऐसा कभी न कहना। यह कहो कि "ऐसा सबके यहाँ हो।"

ऐसा सबके यहाँ हो

अब मूर्खराज और भी आगे बढ़े। तीसरे गाँव में पहुँचे। आप अपना नया मन्त्र याद कर रहे थे—"ऐसा सबके यहाँ हो, ऐसा सबके यहाँ हो।"

मूर्खराज के भाग्य-चन्द्र पर राहु लगे हुए थे। यहाँ भी उनकी कम दुर्गति नहीं हुई। दुर्भाग्य से यहाँ के पटेल का लड़का मर गया था, घर-घर रोना-पीटना मचा हुआ था। आस-पास के पड़ोसी और रिश्तेदार अग्नि-संस्कार का प्रबन्ध कर रहे थे। मूर्खराज थे नसीब के तेज, आपने अपने मन्त्र-पाठ को विस्मरण न किया। लोगों ने सुना तो उबल पड़े। तमाचे मार-मार कर जबड़े सुजा दिए। कहने लगे—"बेवक़ूफ़, उनका तो लड़का मर गया, बेचारों का हृदय जला हुआ है, और तू कहता है कि ऐसा सबके यहाँ हो। तुझे लज्जा नहीं आती? मूर्ख कहीं का, जले को शान्त तो नहीं करता है, और जलाता है।"

मूर्खराज बिलबिला पड़े। कहने लगे—अच्छा भाइयो, अब मैं जले को शान्त करूँगा। जलाऊँगा नहीं। निश्चिन्त रहो, क्षमा करो।

जले को शान्त करना

इस प्रकार तीन जगह पिटकर मूर्खराज ने निश्चय किया कि अब जले को कभी न जलाना चाहिए। ऐसा विचार कर मूर्खराज आगे बढ़े। मूर्ख तो थे ही, इसलिए दुर्दशा हमेशा उनके चार क़दम आगे रहा करती थी। ज़रा ही आगे बढ़े होंगे कि एक गाँव आया। गाँव में कुम्हारों ने अपना आवा जला रक्खा था। मिट्टी के बर्तन पकाए जा रहे थे। मूर्खराज ने इसे देखा तो सन्न हो गए। सोचा— अगर मैं इस जलाए हुए को शान्त न करूँगा, न बुझाऊँगा, तो फिर यहाँ मार खाऊँगा। इसलिए तुरन्त इसे शान्त करना चाहिए।

मूर्खराज के हाथ में एक ताज़ी तोड़ी हुई वृक्ष की डाली थी। उसी से आपने सड़ासड़ झाड़ना शुरू कर दिया। ऐसा करने से आवे के सब बर्तन चूर-चूर हो गए और अग्नि शान्त हो गई।

कुम्हारों ने बर्तन फूटने की आवाज़ सुनी, तो झोंपड़ी से निकल आए। मूर्खराज की कार्रवाई देख कर, सिर पीट बैठे, और मारे गुस्से के मूर्खराज का भर्ता बना दिया। पूछने लगे—नालायक़, यह तूने क्या किया ?

मूर्खराज ने अपनी सारी हक़ीक़त शुरू से आखिर तक कह सुनाई। उसे सुनकर सबने समझ लिया कि यह निरा

मूर्ख है। और समझाया कि देख, अब आगे ऐसा कभी न करना। जलते को जलाना अवश्य, बुझाना मत।

मूर्खराज यहाँ से भी आगे बढ़े।

जलते को जलाना

पास ही एक गाँव और मिला। यहाँ एक घर में आग लग गई थी। घर फूस का था, इसलिए तेज़ी से जल रहा था। आपको मालूम था कि जले को जलाना। आपने चट उसमें से एक जलती हुई लकड़ी खींचकर पास के अनेक झोपड़ों में आग लगा दी। इस समय आपकी लङ्गूरी दौड़ देखने के क़ाबिल थी। गाँव भर में आग फैल गई। हाहाकार मच गया। मूर्खराज की इस करतूत पर लोग जल उठे। कहने लगे—यह जङ्गली कहाँ से आया है, मारो नालायक़ को।

भाई साहब का यहाँ भी काफ़ी स्वागत हुआ। परन्तु सब अपना सामान और जान बचाने में लगे थे। मूर्खराज की खबर कौन लेता? आपने ऐसा अवसर पाकर आगे का रास्ता नापा—भाग खड़े हुए।

स्त्री विधवा हो गई

इस प्रकार कुटते-पिटते मूर्खराज आखिर अपनी ससुराल पहुँच गए। दरवाज़े में ही उनकी साली बैठी हुई थी, बहनोई को आते देख कर उसने कहा—आओ जीजा, आओ। कहाँ से आ रहे हो इस समय ?

मूर्खराज ने कहा—कहाँ से आते, घर से आ रहे हैं।

साली ने फिर पूछा—अच्छा, किसलिए आए हो ?

मूर्खराज ने कहा—अपनी स्त्री को लेने आए हैं।

साली ने हँसते हुए कहा—जीजा, वह तो विधवा हो गई है।

मूर्खराज घबराए और पूछा—कब से वह विधवा हो गई ?

साली ने फिर मज़ाक़ करते हुए कहा—हाय ! हाय ! तुम्हें मालूम ही नहीं ? वह तो बहुत दिनों से विधवा हो गई है।

यह सुनकर मूर्खराज ज्यों के त्यों वापस लौट पड़े। अपने गाँव का रास्ता लिया। साली ने देखा कि यह वास्तव में जा रहा है तो पुकारती हुई दूर तक गई। पर मूर्खराज न लौटे। साली ने मन ही मन कहा—मरने दो जले को, ऐसे मूर्ख के साथ मेरी बहिन क्या सुख पाएगी। ग़रज़ होगी, तो अपने आप झख मार कर आएगा।

तू विधवा कैसे हो गई ?

इधर मूर्खराज सपाटे से रास्ता तय करते हुए घर पहुँचे। अकेला आया हुआ देखकर बहिन ने पूछा—भैया किशुन, भाभी कहाँ है ?

मूर्खराज बोले—अरे, तेरी भाभी तो विधवा हो गई।

यह सुनकर उसकी बहिन ने कहा—दूर मुए बैल, अभी तक अक़्ल नहीं आई ? अरे तू जिन्दा है और तेरी स्त्री विधवा कैसे हो गई ? किसी ने तुझसे मसख़री की होगी।

मूर्खराज ने ज़रा चिढ़कर कहा—वाह, मसख़री कैसी ? अगर ऐसी बात है, तो मेरे ज़िन्दा रहते तू कैसे विधवा होगई ?

मूर्खराज की यह बात सुन बेचारी बहिन लज्जित हो गई और माँ से कहा कि इस बेअक़्ल की ज़िन्दगी कैसे कटेगी ? देखा इसका हाल ? कहता है, मेरी स्त्री विधवा हो गई।

छोटी बहिन को पश्चात्ताप करते हुए देख, उसकी बड़ी बहिन बोली—बहिन, चिन्ता न कर। अब की बार इसे मैं अपने साथ ले जाऊँगी, और वहाँ किसी ऐसे काम में इसे लगवा दूँगी कि ये सब गपड़-चौथ भूल जायगा। वहाँ अच्छा व्यापार होता है, तेरे जीजा से कहूँगी तो किसी न किसी काम में इसे लगवा ही देंगे। बग़ैर वहाँ गए इसे कभी अक़्ल न आएगी। वहाँ काम में लग जायगा, तो सब मूर्खता दूर हो जायगी।

यह सुनकर उसकी माता और बहिन बहुत प्रसन्न हुईं। मूर्खराज से भी उसके साथ जाने की बात कही गई। आप भी बड़े ख़ुश हुए। आपको वहाँ जाने की बड़ी हौंस थी।

कुछ दिनों बाद मूर्खराज की बड़ी बहिन की ससुराल से उसे ले जाने के लिए गाड़ी आ पहुँची। गाड़ी में बैठकर मूर्खराज भी अपनी बहिन के साथ चले। रास्ते में बहिन ने मूर्खराज को बहुत समझाया-बुझाया और कहा—देख भैया, अब तू बड़ा हो चला है। तुझे समझकर चलना चाहिए। कुछ बुद्धिमानी सीखनी चाहिए। इस तरह कैसे काम चलेगा?

मूर्खराज ने सब बातें बड़े ध्यान से सुनीं और कहा—अच्छा बहिन, तुम बेफ़िकर रहो। तुम्हारे कहने के अनुसार ही मैं अब चलूँगा। परन्तु कुत्ते की दुम को चाहे नलिका में बन्द करके सौ वर्ष तक गाड़ रखिए, वह कभी सीधी नहीं होती। मूर्खराज के विषय में भी यही बात थी। उनकी करतूतों को आगे पढ़िए, तो सब मालूम हो जायगा।

सेठ के साले

शाम होते-होते मूर्खराज अपनी बहिन के साथ उसकी ससुराल पहुँचे। गाड़ी घर के आगे खड़ी हो गई। दोनों भाई-बहिन घर में गए। घर में पहुँचते ही नौकर-चाकरों ने नहलाने-धुलाने का प्रबन्ध किया। ब्राह्मण ने भोजन बनाया। सेठ जी को भोजन के लिए बुलाया। सेठ अपने साले के साथ भोजन करने बैठे। रसोइया महाराज ने मूर्ख-राज को खूब घी परोसना शुरू किया। मूर्खराज बोले—हैं! हैं! यह क्या करते हो? इतना घी डाले जा रहे हो।

महाराज ने कहा—भाई साहब, आप सेठ जी के साले हैं, इसलिए आपकी खूब मेहमानी करनी चाहिए।

यह सुनकर मूर्खराज बोले—तो क्या मैं ही सेठ जी का साला हूँ, तुम नहीं हो?

यह सुनकर सब हँस पड़े। बहिन को तो बहुत ही बुरा मालूम हुआ, पर करती क्या। सब भोजन से निबट कर सो गए।

ख़रबूज़े का घाव

पौ फटते ही मूर्खराज उठे। पाख़ाना ज़ोर से लगा था। एक लोटा जल भरा और बाहर जङ्गल की ओर पाख़ाने को चले। आप एक ख़रबूज़े के खेत के निकट जाकर पाख़ाना बैठ गए। खेतवाला खेत में घूमकर ख़रबूज़े देख रहा था। एक ख़रबूज़ा सड़ा हुआ मालूम हुआ। उसने उसे तोड़कर बाहर फेंक दिया। उसे मालूम नहीं था कि मूर्खराज उधर पाख़ाना बैठे हैं। ख़रबूज़ा ठीक उनकी पीठ पर पड़ा और फूट गया। सारी पीठ पानी और बीजों से लथपथ हो गई। मूर्खराज चिल्ला उठे—हाय बाप रे! दौड़ो, दौड़ो, मेरी पीठ में घाव होगया।

इतना कहकर उन्होंने अपनी पीठ पर हाथ फेरकर देखा, तो पीठ ख़रबूज़े के पानी और बीजों से सनी हुई थी। आपने और भी ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया—हाय रे! घाव तो पक भी गया, फूट भी गया और उसमें कीड़े भी पड़ गए। हाय बाप रे! अब क्या करूँ?

सुबह का वक़्त था, इसलिए खेत के पास और कोई नहीं था। केवल खेतवाला ही आया था। उसने रोना-चिल्लाना सुना तो दौड़ा आया। उसने सहज ही में समझ लिया कि भाई साहब पक्के मूर्ख हैं। ख़रबूज़े के रस को ख़ून और बीजों को कीड़े समझ रक्खा है।

खेतवाले ने मूर्खराज को समझाया, शान्त किया और कहा—"भाई शान्त हो, घबड़ाओ मत, मैं अभी तुम्हारा घाव ठीक किए देता हूँ।" उसने कुएँ से एक घड़ा जल लाकर भाई साहब की पीठ साफ़ कर दी और कहा—"क्यों, घाव पुर गया न ?" भाई साहब ने हाथ फेरकर देखा तो दरअसल वह साफ़ थी। उन्होंने समझा, सचमुच घाव अच्छा हो गया। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह खेतवाले के पैर पड़ने लगे। कहने लगे—"भाई, तुम तो बड़े होशियार डॉक्टर हो, मेरी पीठ का इतना बड़ा घाव, जिसमें कीड़े तक पड़ गए थे, ज़रा देर में अच्छा कर दिया। ऐसा होशियार डॉक्टर मैंने आज तक नहीं देखा था।" इस प्रकार अनेक अनुनय-विनय करके भाई साहब ने उसे धन्यवाद दिया, और अपने घर की ओर चले।

इधर उनकी बहिन चिन्ता कर रही थी कि भैया अभी तक क्यों नहीं आया। कहीं रास्ता-वास्ता तो नहीं भूल गया। इसी समय मूर्खराज प्रसन्न होते हुए घर पहुँचे। देखकर बहिन के जी में जी आया। उसने पूछा—इतनी देर कहाँ लगा दी भैया, और इतना प्रसन्न क्यों हो रहा है ?

मूर्खराज ने अपने ऊपर बीती हुई सारी घटना कह सुनाई। उसे सुनकर बहिन बहुत नाराज़ हुई। नौकर-चाकर और उनके जीजा वग़ैरा पेट पकड़कर हँसने लगे और मन ही मन कहने लगे—भाई वाह ! अजीब उजबक आदमी

है। किसने मारा, कैसे घाव हुआ, कैसे पका, कैसे फूटा और तुरन्त कीड़े भी कैसे पड़ गए !

मूर्खराज भी सबके साथ खिलखिला कर हँस रहे थे। वे समझ रहे थे, मेरा घाव अच्छा हो जाने से सब प्रसन्न हो रहे हैं। आख़िर सब अपने-अपने काम में लग गए।

जितना दे उतना न लाना

एक दिन मूर्खराज के बहनोई ने एक रुपया देकर कहा—जाओ इसका घी ले आओ। ज़रा अच्छा लाना। जितना दे, उतना ही न ले आना। भली-भाँति भाव करके लाना। और ज़रा जल्दी आना।

मूर्खराज ने कहा—बहुत अच्छा, मैं भाव-ताव करके लाऊँगा, जितना देगा, उतना कभी न लाऊँगा। जल्दी ही आऊँगा।

निकट ही घी वाले की दूकान थी। आप तुरन्त उसके यहाँ गए। पूछा—घी क्या भाव है ?

घी वाले ने कहा—रुपए का दो सेर।

मूर्खराज ने कहा—नहीं भाई, इस भाव हम नहीं लेंगे। ठीक-ठीक बताओ।

घी वाले ने पूछा—तब क्या भाव लोगे ?

मूर्खराज ने कहा—पौने दो सेर।

घी वाले ने भाई साहब को समझ लिया कि ये सनकी हैं। उसने पौने दो सेर कहकर दो सेर तोल दिया। क्योंकि उसके पास खड़े हुए एक आदमी से मालूम हो गया था कि यह सेठ जी का साला है। घी लेकर वे घर की ओर चले। रास्ते में उन्हें याद आया कि जीजा ने कहा था कि जितना दे, उतना लेकर न आना, इसलिए उस बात का ख्याल

अवश्य ही रखना चाहिए। आपने चट उँगली डालकर चाटना शुरू किया और लगभग पाव भर घी साफ़ कर गए। घी चाट कर आगे बढ़े।

पात्र में घी है, या घी में पात्र ?

चलते-चलते मूर्खराज ने विचार किया कि आख़िर इस पात्र के आधार से घी है, या घी के अधार से पात्र है। कुछ समझ में नहीं आता। इस सूझ की परीक्षा करने की ठानी। आपने रास्ते में खड़े होकर पात्र को लौट दिया। घी पतला था, सब जमीन पर आ रहा। अब मूर्खराज ने समझा कि ओहो ! ये तो पात्र के आधार पर घी था। इस परीक्षा से प्रसन्न होते हुए ख़ाली पात्र लिए वे घर पहुँचे। सेठ जी ने ख़ाली पात्र देखकर पूछा—क्यों, घी नहीं मिला ?

मूर्खराज बोले—नहीं, मिला था ; पर मैंने एक परीक्षा की थी, जिससे सब जमीन पर ढुलक गया। हा ! हा ! हा ! एक बड़ी अच्छी बात मालूम हो गई ! हा ! हा !

सेठ जी ने पूछा—आख़िर क्या बात मालूम हुई, कैसे परीक्षा की ?

मूर्खराज ने शुरू से आख़ीर तक सब हाल कह सुनाया। सेठ जी मन ही मन नाराज़ हुए। कहने लगे—यह नालायक़ तो शीघ्र ही दिवाला निकाल डालेगा। ऐसी बेवक़ूफ़ औरत है, एक व्यर्थ की बला को साथ लगा लाई। मूर्खराज की बहिन ने सुना, तो वह भी बिगड़ी ; पर करती क्या ? भाई ही ठहरा। दूसरा होता तो निकाल दिया जाता। इस घटना

के बाद सेठ जी कोई अच्छा काम उसे न बताते थे। केवल हुक्का वग़ैरह का काम ही उससे लिया करते। उन्होंने निश्चय कर लिया कि यह इसी काम के लायक़ है।

गाड़ी रोती है

सेठ अमरसिंह अच्छे धनी व्यक्ति थे। घर में गाड़ी, घोड़ा, बैल, गाय और भैंस वग़ैरह सब कुछ था। इनके लिए घास की आवश्यकता थी। सेठ जी ने समझा, यह काम मामूली है। साले जी इसे कर सकते हैं, अतः उन्हें बुलाकर समझाया—देखो, गाँव जाकर एक गाड़ी घास तो भरवा लाओ।

मूर्खराज ने बड़ी हौंस से अपनी घर की गाड़ी जोती और रुपए लेकर चल दिए। गाँव से घास मोल लिया और लौटे। गाड़ी में तेल नहीं ओंघा गया था, इससे पहिए चर्र-चूँ बोलने लगे। मूर्खराज ने सोचा की बेचारी पर घास बहुत लद गया है, इसलिए मारे वज़न के रोती है। आप उतर पड़े और पैदल गाड़ी हाँकने लगे। ज़रा आगे बढ़ते ही एक नदी आई। पानी में होकर गाड़ी निकली, तो चर्र-चूँ बन्द हो गया। यह देखकर मूर्खराज ने समझा कि अधिक भार से बेचारी गाड़ी मर गई है, इसलिए नहीं बोलती।

गाड़ी की मृत्यु

नदी के उस पार पहुँचकर मूर्खराज ने गाड़ी थाम दी। बैलों को खोलकर एक तरफ़ खड़ा कर दिया। आप के पास बीड़ी पीने के लिए दियासलाई थी, घिस कर तुरन्त घास में लगा दी। गाड़ी का अग्नि-संस्कार होने लगा। उधर बैल वहाँ से छूटकर सीधे घर पहुँचे। सेठ जी ने दरवाज़े पर बैलों को खड़े देखा तो नौकर से कहा—अरे रम्मू, ये बैल कैसे खड़े हैं? क्या घास की गाड़ी आ गई?

नौकर ने बाहर आकर देखा तो वास्तव में वे ही बैल थे। उसने कहा—बैल तो हैं, पर गाड़ी का कहीं पता नहीं।

सेठ ने मन ही मन समझा कि नालायक़ ने फिर कोई उत्पात खड़ा किया है। नौकर से कहा—भाई, आगे जाकर ज़रा तलाश तो करो, मामला क्या है?

नौकर खोजता हुआ नदी के किनारे आ पहुँचा। देखा, गाड़ी जल रही है, मूर्खराज रो रहे हैं।

नौकर ने पूछा—क्यों रोते हो? गाड़ी कैसे जल गई?

मूर्खराज ने रोते-रोते सिर ऊपर उठाकर कहा—क्या बताऊँ भाई, नालायक़ रास्ते में आकर मरी। अग्नि-संस्कार करना पड़ा। इसीलिए रो रहा हूँ। बेचारी का यहाँ कौन बैठा था जो रोता?

नौकर मन ही मन बहुत नाराज़ हुआ, खब फटकार

बतलाई। मूर्खराज को घर ले गया। सब हाल सेठ जी को सुनाया। सुनकर वे ग़ुस्सा हुए और हँसते-हँसते अपनी स्त्री से सब कथा कही। वह बेचारी बहुत दुखी हुई।

मूर्खराज की ऐसी कार्रवाइयाँ देखकर सेठ जी ने निश्चय कर लिया कि अब कभी उसे ऐसा काम नहीं सौंपा जायगा। हुक़्क़ा भरना, बच्चों को खिलाना वग़ैरह काम ही इससे कराए जायँ। उसकी बहिन विचारने लगी—यह मुआ कब सुधरेगा, कैसे जीवन बिताएगा। जो काम इसे सौंपा जाता है, हमेशा उलटा ही किया करता है।

स्त्री का क्रोध

सेठ जी ने बहुत दिनों तक मूर्खराज को कोई बड़ा काम नहीं सौंपा। इसी प्रकार तीन वर्ष बीत गए। मूर्खराज को उसकी बहिन रोज़ समझाया करती थी और सेठ जी ने भी अभी तक उसे कोई अच्छा काम नहीं सौंपा था, इसलिए मूर्खराज से कोई खास अपराध नहीं हुआ था। बहिन ने सोचा—मूर्खराज अब कुछ समझदार हो गया है, इसलिए कोई अच्छा काम उसे बतलाना चाहिए।

एक दिन सेठ जी भोजन करने बैठे। मूर्खराज की बहिन ने भोजन परसा, सेठ जी भोजन करने लगे। वह पङ्खा झलने लगी। मीठी-मीठी बातें करने लगी। सेठ जी बड़े बुद्धिमान् आदमी थे, उन्होंने सेठानी की मीठी-मीठी बातें सुनकर तुरन्त समझ लिया कि इनकी बातों में ज़रूर कोई रहस्य है। सेठानी ने इधर-उधर की अनेक बातें कीं, पर वे बिलकुल चुप रहे। किसी बात का जवाब न दिया। अपनी किसी भी बात का जवाब न पाकर सेठानी को बड़ा क्रोध आया। उसने भी मुँह फुला कर बात करना बन्द कर दिया। यह देखकर सेठ जी ने समझ लिया, यह गुस्सा हो गई है, इसी लिए नहीं बोलती। सेठ जी ने कई बातें पूछीं, पर उसने एक का भी उत्तर नहीं दिया। आखिर सेठ जी ने पूछा—मामला क्या है, मुँह क्यों चढ़ा रक्खा है?

सेठानी ने कहा—मैं किस पर मुँह चढ़ाऊँ, मेरा किस पर ज़ोर है ?

सेठ जी बोले—ऐसा क्यों कहती हो, मैंने कभी तुम्हारी बात टाली है ?

सेठानी ने कहा—अगर ऐसा ही होता, तो मेरे भाई को कोई काम न सौंपा जाता ? आज वह कई दिनों से हुक्का भरने और बच्चे खेलाने के काम में ही लगा हुआ है, इससे क्या उसकी ज़िन्दगी सुधरेगी ? तुम घर के होकर ही जब उसे ठिकाने न लगाओगे तो कौन लगाएगा ? उसे और किसका सहारा है ?

इतना कहकर सेठानी आँखों में पानी भर लाई और मुँह फुलाकर एक ओर बैठ गई। यह ढोंग देखकर सेठ ने कहा—जो ठिकाने लगा हो, उसे क्या ठिकाने लगाया जाय ?

सेठानी बोली—सही है, इसी से तो उसका जीवन सुधरेगा। तुम ऐसी बातें कहकर मुझे खिझाओ मत। चूल्हे में गया ऐसा खाना-पीना, तुम सुख से खाओ-पियो।

इतना कहकर वह उठी और एक ओर जाकर सो गई। छः महीने का बालक खाट पर रो रहा था, न उसने उठाया, न दूध ही पिलाया। यह देखकर सेठ ने बहुत-कुछ समझा कर कहा—फ़िकर न करो, तुम जो कहोगी, हो जायगा। बे फ़िकर रहो। उठो, छोकरे को दूध पिलाओ, भोजन ठण्ढा हो रहा है, खा लो।

सेठानी ने कहा—तभी दूध पिलाऊँगी और भोजन तभी करूँगी, जब तुम मेरी प्रत्येक बात मानने की प्रतिज्ञा कर लो।

सेठ समझदार थे, उन्होंने समझा, यदि इस वक़्त बात न मानी जायगी, तो बालक पर आफ़त आ जायगी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली।

मुनीम की जगह मूर्खराज

भोजन से निबटने के बाद सेठानी ने पान लगाया। सेठ जी को दिया और खुद खाया। इतने ही में एक नौकर ने आकर सूचना दी कि बञ्जारे पाँच सौ बोरा गेहूँ भरकर लाए हैं। गाँव के बाहर ठहरे हैं। यह सुनकर सेठ जी अपनी स्त्री की ओर देखकर बोले—बतलाओ, अब क्या किया जाय? मुनीम जी तो भोजन करने घर को गए हैं। अब किसे भेजें?

सेठानी ने कहा—मुनीम जी इसमें क्या कर लेंगे? व्यर्थ ही पाँच सौ रुपया साल भर का पानी में फेंक दिया जाता है।

सेठ ने समझा, अगर इस वक़्त कुछ कहा जायगा तो फिर झगड़ा बढ़ेगा, इसलिए इस समय इनके भाई को ही भेज दिया जाय। बाद में सब ठीक हो जायगा। यह विचार कर सेठ बोले—हाँ ठीक है। तुम्हारे भाई को ही भेज दें। वह वहाँ जाकर सब मालूम कर आए।

सेठानी ने मूर्खराज को बुलाकर कहा—देखो, तुम्हारे जीजा कहाँ भेज रहे हैं।

मूर्खराज ने सेठ से कहा—कहिए, कहाँ भेज रहे हैं?

सेठ ने कहा—गाँव के बाहर बञ्जारे पड़े हैं, पाँच सौ बोरा गेहूँ लाए हैं, जाकर सब तय तो कर आओ। कैसा गेहूँ है।

तीन वर्ष के बाद आज मूर्खराज बहुत ख़ुश हुए कि मुझे काम तो सौंपा। मूर्खराज ने बञ्जारों के पास जाकर पूछा—क्यों जी, क्या भर कर लाए हो ?

एक बञ्जारे ने कहा—गेहूँ।

मूर्खराज ने पूछा—कैसा है ?

बञ्जारे ने कहा—ख़ास चन्दौसी का।

मूर्खराज सेठ के पास आए और बोले—चन्दौसी का गेहूँ है। सेठ ने कहा—बेचेंगे ?

मूर्खराज ने फिर जाकर पूछा—क्यों भाई, बेचोगे ?

बञ्जारे ने कहा—बेचने के लिए ही तो लाए हैं।

मूर्खराज ने सेठ से आकर कहा—जी, बेंचने के लिए ही लाए हैं।

सेठ ने झल्लाकर पूछा—आख़िर भाव क्या है ?

मूर्खराज ने आकर भाव पूछा। मालूम हुआ, दस रुपए बोरा देंगे। मूर्खराज सेठ जी के पास आए और कहा—दस रुपए बोरा देते हैं, पर मेरा ख्याल है कि १५) रु० बोरा दें, तो खरीद लिया जाय।

यह सुन सेठ अपनी स्त्री की ओर देखकर बोले—देखी अपने भाई की होशियारी ! सारा दरिद्र दूर कर देंगे। जिसका जो काम होता है, उसे वही कर सकता है। कतरनी नाख़ून काट सकती है, सिर नहीं मूँड़ सकती।

———

मुनीम जी की बुद्धिमानी

इसके पश्चात् सेठ ने मुनीम जी के नाम एक चिट्ठी लिख कर नौकर के हाथ भेजी। चिट्ठी में लिखा था—गाँव के बाहर एक बालद आई है, पाँच सौ बोरा गेहूँ उनके पास है। शीघ्र वहाँ जाइए और देख-भाल कर उचित भाव में उसे ख़रीद लीजिए।

चिट्ठी पाते ही मुनीम जी वहाँ पहुँचे और सबसे पहले वहाँ जाकर गेहूँ ख़रीद लिया। गेहूँ बड़े फ़ायदे का था। कई व्यापारी आए और सौदा करने लगे। जब फ़ी बोरा एक रुपया मिलने लगा, तो आपने सब माल तुरन्त उसी जगह बेच दिया और पाँच सौ रुपया लेकर मुनीम जी सेठ के पास चले। सेठ के पास पहुँचकर रुपयों का ढेर लगा दिया। सेठ ने पूछा—मुनीम जी, ये कैसे रुपए हैं?

मुनीम जी ने उत्तर दिया—आपकी चिट्ठी के पाते ही मैं बञ्जारों के पास गया और बातचीत करके गेहूँ के सब बोरे ख़रीद लिए। गेहूँ फ़ायदे के थे। कई व्यापारी ख़रीदने के लिए आए, बेचने के लिए मुझसे आग्रह किया। रुपया बोरे का लाभ मैंने देखा, तो सब माल बेच दिया। उसी से ये पाँच सौ रुपए मिले हैं।

निकट ही के कमरे में सेठ जी की स्त्री भी बैठी थी, सेठ ने उन्हें लक्ष्य कर कहा—देख रही हो मुनीम जी की

बुद्धिमानी ! ज़रा देर में अपनी साल भर की तनख्वाह वसूल कर लाए। तुम्हारे भाई ने छः चक्कर लगाए, तब कहीं भाव पूछ पाए।

यह सुनकर सेठ जी की स्त्री बोली—मनुष्य है, भूल हो सकती है। उसने कभी ऐसे काम तो किए नहीं, करते-करते सब सीख जायगा। कोई माँ के पेट से सीखकर थोड़े ही आता है। मुनीम जी ने भी बहुत ठोकरें खाई होंगी, बहुत ग़लतियाँ की होंगी, तब कहीं इतना काम सीखा होगा। वह भी सीख लेगा। पर मुझे मालूम हो रहा है कि तुम्हें उसका मुँह देखना भी पसन्द नहीं। तुम उसे रास्ते पर लाना ही नहीं चाहते।

सेठ ने कहा—देखो, व्यर्थ की बातें मत करो, व्यर्थ की ज़िद मत करो, तुम्हारे भाई में जितनी बुद्धिमानी है, उसे मैं और तुम दोनों जानते हैं। फिर भी तुम नहीं मानतीं तो कोई चिन्ता नहीं, आगे चलकर तुम्हारी आँखें खुलेंगी। इस समय तुम जो कहोगी, वह तुम्हारे भाई के साथ किया जायगा। यह भी देखना कि कैसा उजला करके आता है।

सेठानी बोली—उजाले और अँधेरे की बात रहने दो, उलटा-सीधा बोलकर तुम्हें तो आज लड़ना है। लो, मैं जाती हूँ। सुखी हो जाओ। परायों को खिलाना ही तुम्हें आता है और अपने दुश्मन मालूम होते हैं। यह ध्यान नहीं कि दुख

के समय अपने ही काम आते हैं, पराए झाँककर भी नहीं देखते।

इस प्रकार बड़बड़ाती हुई सेठानी वहाँ से चली गई और किवाड़ बन्द करके सो गई।

चम्पा का विवाह

बिलकुल शाम हो जाने पर सेठानी उठीं। नौकरों ने दिया जलाया, रसोइए ने भोजन तैयार कर लिया। सेठ भोजन करने को बैठे। सेठानी को बुलाया। भूख खूब लगी हुई थी, इसलिए सेठानी चुपचाप बैठ गईं। परन्तु क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। यह देखकर सेठ ने सोचा कि इनके क्रोध को दूर करना चाहिए। सेठ जी ने धीरे-धीरे कहा—देख रही हो, देखते-देखते चम्पा १४-१५ वर्ष की हो गई, अब इसका विवाह करना चाहिए। गाँव में तो इसके योग्य कोई वर है नहीं, बाहर किसी समझदार आदमी को भेजकर कोई अच्छा वर तलाश करवाना चाहिए। परन्तु इसके लिए किस आदमी को भेजा जाय, यह समझ में नहीं आता। तुम्हें जिसपर विश्वास हो, उसे भेजा जाय।

सेठानी ने क्रोध-भरे स्वर में कहा—और किसे भेजा जायगा? मुझे अपने भाई के सिवा और किसी पर विश्वास नहीं है। इसलिए यदि भेजना हो तो उसे भेजो, और न भेजना हो तो न भेजो। यह मुझे मालूम है कि तुम मुझसे पूछ अवश्य लेते हो, परन्तु करते हो अपने मन की ही। तो भी इस अभागिनी से बोले बिना नहीं रहा जाता। यह मुई ज़बान ही ऐसी है। मैं बहुत सोचती हूँ कि तुम्हारे काम में दख़ल न दूँ, पर क्या करूँ, यह ज़बान नहीं मानती। अब

मैं कहे देती हूँ कि मुझसे किसी काम के बारे में न पूछा कीजिए ; और पूछें तो जो मैं कहूँ, वही किया कीजिए।

यह सुनकर सेठ ने कहा—तुम्हारी इच्छा है, तो तुम्हारे भाई को ही भेज दिया जायगा। अभी से तैयारी करो, उन्हें समझा दो और कल सुबह ही भेज दो। वह अच्छा करके आए या बुरा, पीछे मुझे दोष मत देना।

सेठानी ने गम्भीरता से कहा—लड़की के भाग्य में जो बदा होगा, सो होगा। इसमें कोई क्या कर लेगा ?

भोजन समाप्त हुआ। सेठ ने हाथ-मुंह धोकर पान खाया और जाकर बिस्तर पर लेट रहे। सेठानी अपने भाई को भेजने की तैयारी करने लगीं। नौकर से भी कह दिया गया कि सुबह पाँच बजे गाड़ी तैयार रक्खे। इस प्रकार सब प्रबन्ध करके सेठानी भी अपने बिस्तर पर आकर सो गईं। आज वे अपनी इस विजय से अपने मन में बहुत खुश थीं।

बीस बरस के बदले

सुबह के चार बजे, मुर्गों ने बाँग दी। गाड़ी वाले नौकर ने सेठ और सेठानी को जगाया। गाड़ी जोतकर दरवाज़े के सामने खड़ी कर दी। सेठानी ने अपने भाई को उठाया। हाथ-मुँह धुलाकर कुछ जल-पान कराया और गाड़ी में बैठाकर समझाया—भैया, कल तुम्हें समझा ही दिया है, चम्पा के लिए ऐसे वर की तलाश करना, जिससे उसका जीवन सुख से बीते—कोई दुख न हो। उमर बीस से ज्यादा-कम न हो।

इतना कहकर सेठानी ने अच्छे शकुन में गाड़ी हँकवा दी। चलते-चलते उसने कहा—देखो, ज़रा विचार कर काम करना। काम पूरा करके ही आना। जो कुछ पूछना हो, इसी वक़्त पूछ लो।

मूर्खराज ने उत्तर दिया—बहिन, मुझे अब कुछ नहीं पूछना है, मैं सब समझ गया। तुमने जो मुझे समझाया है, मैं वही करके आऊँगा। तुम किसी तरह की चिन्ता न करो।

बहिन ने कहा—तो जाओ, ईश्वर मङ्गल करे।

नौकर ने गाड़ी दौड़ा दी। चलते-चलते दोपहर का समय हो आया। एक वट-वृत्त के नीचे गाड़ी छोड़ दी गई। खाने का सामान सब साथ बँधा हुआ था। खा-पीकर

मूर्खराज ज़रा लेट गए। लेटे-लेटे मूर्खराज सोचने लगे—बहिन ने बीस वर्ष का वर तलाश करने के लिए कहा है, परन्तु बीस बरस का अगर न मिले, तो क्या किया जायगा, इसलिए इस बात को ज़रूर तय कर आना चाहिए। यह निश्चय कर उन्होंने तुरन्त नौकर से कहा—अरे चुन्नी, गाड़ी तो जोत। हमें फिर घर चलना है।

चुन्नी ने कहा—भैया, बग़ैर काम किए कैसे घर लौट रहे हो ?

मूर्खराज ने झल्लाकर कहा—बेवक़ूफ़ कहीं का, तुझे क्या मालूम ? हम जो कहते हैं वह कर। ज्यादा बकवाद करने से कोई फ़ायदा नहीं।

चुन्नी तो जानता ही था कि भैया पल्ले सिरे के मूर्ख हैं। इसलिए गाड़ी जोत कर उसे बिठलाया और गाँव की ओर चल दिया। घण्टा भर दिन रहते ही गाड़ी गाँव में आ पहुँची। सेठ जी दरवाज़े में ही खड़े थे। गाड़ी को लौट आई देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने सेठानी को आवाज़ दी और कहा—लो, वो तुम्हारे भाई साहब आ गए। ज़रा समाचार तो पूछो।

सेठानी को विश्वास नहीं हुआ। किन्तु सेठ ने जब दुबारा आवाज़ देकर बुलाया, तो वे आईं। आकर देखा तो सचमुच भाई साहब बाहर खड़े थे। बड़ा विस्मय हुआ। मन ही मन खीझ कर कहा, ये मुआ लौट क्यों आया ? निकट आते ही

बहिन और बहनोई ने पूछा—क्यों भाई, कुशल तो है? लौट क्यों आए?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—मुझे ज़रा एक सन्देह हो गया है, उसे दूर करने के लिए आया हूँ।

दस-दस बरस के दो

बहिन ने बहुत खीझकर पूछा—कौन से सन्देह को दूर करने आया है? मैंने तुझसे कहा नहीं था कि जो पूछना हो, पूछ ले?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—क्या कहूँ, उस समय तो मुझे याद ही न आया। नाराज़ न हो, मुझे यह पूछना था कि अगर बीस वर्ष का वर न मिले, तो दस-दस बरस के दो वरों के साथ चम्पा का विवाह तय कर आऊँ?

यह सुनकर सेठ को बहुत गुस्सा आया, उन्होंने कहा—मूर्ख, गधा कहीं का, तू ही ये काम कर लेगा, तो दूसरे क्या हजामत बनाएँगे; उतर गाड़ी में से।

सेठ ने नौकर से गाड़ी खोलने के लिए कहा और सेठानी की ओर आँखें निकाल कर कहा—ऐसे बेवक़ूफ़ को और इस काम के लिए? नालायक़ कहीं की, व्यर्थ ही ज़िद करके मुझे लोगों में नीचा दिखलाती है।

सेठ का मिज़ाज गर्म हुआ देखकर सेठानी चुप हो गई। चुपचाप भोजन करके सो गई। इस घटना के बाद, अपने भाई को काम सौंपने के लिए सेठानी ने फिर कभी न कहा। मूर्खराज फिर हुक़्क़ा-पानी के काम में लग गए।

बुद्धिमती की बीमारी

एक दिन अनन्तपुर से बुढ़िया बुद्धिमती का पत्र आया। उसमें लिखा था—मैं एक सप्ताह से बहुत बीमार हूँ, ज्वर आता है। इसलिए किशनसिंह को तुरन्त ही भेज दीजिए। चिन्ता की कोई बात नहीं है, आप अधिक चिन्ता न कीजिएगा। किशन को शीघ्र भेज दें। कोई विशेष कष्ट होगा, तो आपको खबर दूँगी।

पत्र का समाचार सुनकर सेठानी ने विचार किया कि माता का बुढ़ापे का समय है, न जाने कब क्या हो जाय। इसलिए किशन को प्रातःकाल ही भेज देना चाहिए। प्रातःकाल होते ही मूर्खराज को बिदा करने की तैयारी हो गई। परन्तु घर की गाड़ी किसी काम से बाहर गई थी, इसलिए किसी किराए की गाड़ी में बैठ जाने के लिए सेठ ने कुछ पैसे दिए। मूर्खराज को जाते समय बहिन ने शिक्षा दी—देख भाई, मार्ग में ज़रा होशियार रहना, और घर पहुँच कर माँ की बीमारी का हाल तुरन्त लिखना।

बहिन का उपदेश सुनकर मूर्खराज ने कहा—बहुत अच्छा बहिन, मैं तुरन्त चिट्ठी लिखूँगा।

इतना कहकर मूर्खराज चल दिए।

रस्सी थाम कर बैठना

थोड़ी दूर गए होंगे कि एक घास से भरी हुई गाड़ी मूर्खराज को मिली। मूर्खराज ने गाड़ी वाले से कहा— अरे गाड़ी वाले, गाड़ी में बिठलाएगा ?

गाड़ी वाले ने कहा—भाई, गाड़ी भरी हुई है, नहीं तो मैं बिठला लेता।

मूर्खराज ने कहा—भाई मैं बहुत थक गया हूँ, मुझे किसी तरह बिठला लो। मैं अब एक पग भी आगे नहीं चल सकता।

गाड़ी वाला दयावान् था। उसने कहा—अच्छा भाई, तुम्हारी इच्छा है तो बैठ जाओ। किन्तु ज़रा रस्सी थाम कर बैठना। नहीं तो गिर जाओगे।

मूर्खराज चट ऊपर चढ़ गए, और रस्सी का बचा हुआ एक लम्बा छोर पकड़ कर बैठ गए। गाड़ी वाले ने गाड़ी हाँकते हुए फिर कहा—देखो भाई, रस्सी को भली-भाँति पकड़ लेना।

मूर्खराज झल्ला पड़े, कहने लगे—दीखता नहीं तुम्हें? कितनी लम्बी रस्सी थामे हुए हूँ।

गाड़ी वाला नीचे बैठा था, उसने समझा, जिस रस्सी से घास कसी हुई है, उसी रस्सी को पकड़े होगा। उसने गाड़ी को तेज़ कर दिया। मूर्खराज कसी हुई रस्सी को न

पकड़ कर, उसका बचा हुआ छोर पकड़े बैठे थे। गाड़ी थोड़ी दूर पहुँची होगी कि आगे एक गढ़ा आया। गाड़ी वाले ने फिर सूचित दिया—देखो भाई, रस्सी को अच्छी तरह थाम लेना, आगे एक गहरा गढ़ा आ रहा है।

मूर्खराज ने कहा—भाई, तुम निश्चिन्त रहो, मैंने रस्सी दोनों हाथों से थाम रक्खी है। गाड़ी हाँके चलो।

कुछ आगे बढ़ते ही गढ़ा आया और गाड़ी का पहिया धम् से उसमें समा गया। गाड़ी टेढ़ी हुई और मूर्खराज लुढ़क कर दूर जा गिरे। चिल्लाने लगे—हाय बाप रे! मैं मर गया। अरे गाड़ी वाले, ज़रा ठहर भाई। मैं तो नीचे गिर गया।

गाड़ी थामकर गाड़ी वाला बेचारा तुरन्त दौड़ आया। आकर उसने मूर्खराज को उठाया और कहा—मैंने तुमसे कहा था, रस्सी थाम लेना। तुमने कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

मूर्खराज बोले—भाई, मैंने तो दोनों हाथों से रस्सी को थाम रक्खा था, परन्तु नीचे गिरते ही वह हाथ से छूट गई। देखते नहीं वह लटक रही है।

गाड़ी वाले ने रस्सी का लटकता हुआ छोर देखा और हँसते हुए कहा—तुम्हारा सिर लटक रही है, मैंने तुमसे बँधी हुई रस्सी पकड़ने को कहा था या इस छोर को? तुम तो निरे मूर्ख मालूम होते हो।

यह सुन कर मूर्खराज बोले—भाई, तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई कि मेरा नाम मूर्ख है?

गाड़ी वाले ने कहा—तुम्हारी बातों से ही प्रकट होता है कि तुम मूर्ख हो। मूर्खों के सींग थोड़े ही होते हैं।

इतना कहकर गाड़ी वाला चल दिया। मूर्खराज खिल-खिला कर हँस रहे थे। गाँव भी पास ही था। चल कर थोड़ी देर में मूर्खराज घर आ पहुँचे। उस समय दिन ढल चुका था।

बुढ़िया की मृत्यु

मूर्खराज ने घर में आकर देखा, तो बुढ़िया अन्तिम साँस ले रही थी। मूर्खराज को देखने के लिए ही उसका दम अटका हुआ था। मूर्खराज घर में आए तो बुढ़िया ने केवल उसे एक नज़र देख लिया। बोल नहीं सकी। मूर्खराज तो मूर्खराज ही थे, वे क्यों बोलते-चालते। थोड़ी देर में बुढ़िया बुद्धिमती स्वर्ग सिधार गई। सगे-सम्बन्धी आए, रोना-धोना मच गया। थोड़ी देर के बाद बुढ़िया को श्मशान ले गए और मूर्खराज से अग्नि-संस्कार कराया। देखते-देखते बुढ़िया का शरीर जलकर भस्म हो गया। सब लोग स्नान करके घर आए। द्वार तक आकर सब लोग अपने-अपने घर चले गए। स्त्रियाँ भी रो-धोकर अपने-अपने घर चली गईं।

जब रात पड़ गई, तो मूर्खराज और उसकी विधवा बहिन ने मिलकर जल-पान किया। बुढ़िया की मृत्यु से मूर्खराज की बहिन को बड़ा दुख था, इसलिए उससे भली-भाँति कुछ खाया न गया। मूर्खराज को बहुत ज्यादा भूख लगी हुई थी, इसलिए उन्होंने खूब सफ़ाई की। थोड़ी देरके बाद दोनों बहिन-भाई अपनी-अपनी जगह सो गए। प्रातः-काल होते ही उठे और दो-चार पड़ोसियों को बुलाकर, माँ की मृत्यु के समाचार लिखवाकर अपनी बहिन के पास

भेजा। सेठ अमरसिंह के पास जब पत्र पहुँचा, तो उन्होंने अपनी स्त्री को स्नान कराया।

दूसरे दिन प्रातःकाल सेठानी अपनी गाड़ी में बैठकर पीहर की ओर चलीं। सन्ध्या होते-होते गाड़ी गाँव के किनारे आ लगी। गाड़ी को वहीं रोक कर सूचना देने के लिए आदमी को गाँव में भेजा। उसने आकर मूर्खराज से कहा। मूर्खराज ने बहिन से कहा। बहिन ने पास-पड़ोसी, सगे-सम्बन्धियों को बुला लिया। वह आदमी सूचना देकर चला गया था। औरतों के इकट्ठा होते-होते मूर्खराज की बड़ी बहिन भी गाड़ी हँकवाकर आ पहुँची। घर में फिर रोना-धोना मच गया। बड़ी बहिन भी रोती-रोती घर में पहुँची और छाती-माथा कूटते हुए कहने लगी—हाय री मेरी मैया, तू कहाँ चली गई, अब मेरे भैया और बहिन की रक्षा कौन करेगा? हाय मेरी मैया! मेरा भैया रो-रो मरेगा।

मूर्खराज का रोना

बहिन को अपना नाम लेकर रोते हुए देखा, तो मूर्खराज बहुत चिढ़े। तेज़ी से आए और रोती हुई औरतों में बैठकर रोने लगे—हाय मेरी माता, क्यों मर गई; हाय मेरी माता, बड़ी अच्छी थी; हाय मेरी माता, बहिन को कौन सँभालेगा; हाय मेरी माता, वह रो-रोकर मर जायगी।

मूर्खराज का यह तमाशा देख कर रोती हुई सब औरतें हँस-हँस कर लोटने लगीं। बड़ी बहिन तो बहुत ही लज्जित हुई। खिसिया गई। मन में कहने लगी—इस मुए ने ये क्या किया, इसे यह क्या सूझा? उसने क्रुद्ध होकर मूर्खराज से कहा—मूर्ख कहीं के, ये क्या कर रहा है? निकल यहाँ से।

मूर्खराज ने भी क्रोधित होकर कहा—तो हाय रे भाई, हाय रे भाई करके तू क्यों रो रही थी? क्या मैं मुफ़्त में आया हूँ। अपने ख़ाविन्द का नाम लेकर क्यों नहीं रोती? मेरा नाम लेकर रोएगी तो मैं भी तेरा नाम लेकर रोऊँगा। राँड, अभागिनी, अब रो तो देखूँ।

इतना कह कर मूर्खराज कुर्त्ते की बाँह चढ़ाकर खड़े हो गए। परन्तु सबने मूर्खराज को समझाया-बुझाया और बाहर लाकर बिठला दिया। सब औरतें अपने-अपने घर चली गईं। दोनों बहिनें मूर्खराज की करतूत पर विचार करके बड़ी दुखी हुईं। कहने लगीं—बेचारी माँ तो मर गई,

अब इस मूर्ख का कैसे गुज़र होगा ? कई लोग कहते हैं कि इसकी मूर्खता का हाल सुनकर इसके ससुर ने इसकी स्त्री का पुनर्विवाह दूसरी जगह कर दिया है। अगर यह बात सच होगी, तो ये मूर्ख यों ही मर जायगा।

बड़ी बहिन ने कहा—मैं इसे अपने यहाँ ले गई थी, पर वहाँ भी इसने अपनी मूर्खता का ख़ासा परिचय दिया। तेरे जीजा तो घबड़ा उठे—उकता गए।

विधवा बहिन बोली—बहिन, जो भाग में बदा होगा, वह होगा। हम क्या कर लेंगी, स्त्री-जाति ठहरीं।

इस प्रकार पश्चात्ताप करके भोजन आदि से निबट कर सब सो गए। होते-होते बुढ़िया का बारहवाँ आ पहुँचा। जाति-बिरादरी के बहुत से लोगों को बुलाया गया। तरह-तरह के पकवान खिलाए गए। बड़े समारोह से क्रिया सम्पन्न हुई। बड़ी बहिन अपने घर लौट गई और सुख से दिन बिताने लगी।

इधर मूर्खराज खाते-पीते, घूमते और मौज करते। बुढ़िया बुद्धिमती ने मूर्खराज के लाए हुए चोर की थैली वाले रुपयों को दूना कर लिया था। मूर्खराज उन्हीं को उड़ाने लगे। एक दुबला-पतला घोड़ा भी उन्होंने ख़रीद लिया।

गाँव की सैर

घर में बैठ कर खाते-खाते मूर्खराज ऊब गए। एक रोज़ विचार किया कि किसी गाँव की सैर करनी चाहिए। विचार आते ही आप दूसरे दिन प्रातःकाल अपने टूटे घोड़े पर लदकर गाँव की ओर चल दिए। खाने-पीने के लिए बाज़ार से मिठाई-पूरी वग़ैरा सब कुछ ख़रीदकर बाँध लिया। चलते-चलते आपको घोड़े की हालत पर दया आगई। आपने विचार किया—घोड़ा दुबला-पतला है, बेचारा वज़न से थक जायगा। आपने अपने सामान की पोटली बनाकर अपने सिर पर रख ली और चलने लगे। आगे एक आदमी मिला। उसने पूछा—क्यों भाई, ये पुटलिया सिर पर क्यों रक्खी है?

मूर्खराज ने कहा—भाई मेरा घोड़ा बेचारा कमज़ोर है, पोटली उस पर रक्खूँगा तो उसे बहुत कष्ट होगा। उस आदमी ने फिर पूछा तो क्या सिर पर रखने से घोड़े को वज़न न मालूम होगा? अजीब मूर्ख है।

'मूर्ख' शब्द सुनकर मूर्खराज आपे से बाहर होगए। कहने लगे—तू क्या जानता है? बेवक़ूफ़, चला जा अपने रास्ते, नहीं तो अभी मैं दो-चार लात जमाऊँगा। वह आदमी तुरन्त समझ गया कि ये तो वास्तव में मूर्ख है। उसने अपना रास्ता नापा।

आगे एक आदमी और मिला। उसने भी वही प्रश्न किया। मूर्खराज ने उत्तर दिया—एक बेवक़ूफ़ मिला था, उसे समझा कर बिदा किया। एक तुम भी बेवक़ूफ़ मिले हो। अरे तुम्हारी समझ में नहीं आता कि अगर मैं पोटली घोड़े पर रक्खूँगा, तो बेचारा दुबला-पतला घोड़ा मर जायगा, कैसे नादान हो! जाओ, चले जाओ अपने रास्ते, तुम्हें मतलब किसी से ?

वह बेचारा मूर्खराज की लताड़ सुनकर चुपचाप एक ओर चला गया। चूँ तक नहीं किया। मूर्खराज आगे बढ़े।

सिर के पास पोटली

मूर्खराज ने एक दरख़्त के नीचे घोड़े को बाँधकर, उसे चारा वग़ैरा खिलाकर, आपने भी अपनी पेट-पूजा की और अपनी पोटली को सिर के पास रखकर सो गए। थोड़ी देर के बाद उधर से एक चोर निकला। उसने मूर्खराज को खर्राटे लेते देखा, तो पोटली उठाई और घोड़े पर बैठकर नौ-दो ग्यारह हुआ। कुछ देर के बाद मूर्खराज उठे, और अपने पास पोटली और घोड़े को न देखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। एक साहूकार अचानक उधर से निकला। उसने मूर्खराज को रोता देखा तो पूछा—क्यों रोते हो भाई, क्या बात है, ज़रा बतलाओ तो ?

मूर्खराज ने रोते-रोते सब कथा कह सुनाई और रो-रोकर कहने लगे—हाय बाप रे, अब मैं क्या करूँगा। कैसे घर पहुँचूँगा !

हीरा या मिश्री ?

इस प्रकार रोता देख साहूकार को दया आ गई। उसने अपनी पेटी में से निकाल कर एक हज़ार के मूल्य का एक हीरा मूर्खराज को दिया और समझा-बुझाकर बिदा किया। शाम हो गई थी। मूर्खराज पास ही की एक धर्मशाला में जा सोए। इतने में वह चोर भी, घोड़ा और पोटली वग़ैरा घर पहुँचाकर आ पहुँचा। उसने सोचा—इसके पास और भी कुछ हो तो हथिया लेना चाहिए। इसी विचार से वह मूर्खराज के पास आकर बैठ गया और उससे मीठी-मीठी बातें करने लगा। बात ही बात में चोर ने समझ लिया कि ये पक्के मूर्ख हैं। चोर ने पूछा—भाई, तुम कहाँ के रहने वाले हो ? कहाँ जाओगे ? तुम्हारे पास कुछ सामान नहीं दीखता। क्या खाओगे, पियोगे ?

मूर्खराज बोले—अजी खाने-पीने की कोई चिन्ता नहीं। मुझे उस साहूकार ने एक हजार के मूल्य का एक हीरा दिया है, उसे बेचकर बहुत-कुछ ख़रीद लूँगा, पर अभी भूख ही नहीं है। मेरा सब सामान दोपहरी में एक चोर ले गया।

एक हज़ार के हीरे की बात सुनकर चोर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। दौड़ा-दौड़ा घर गया और खाने के लिए कुछ फल और मिश्री ले आया। उसने पहले फल खिलाए और बाद में मिश्री देकर कहा—देखो, ये कैसी मीठी है।

मूर्खराज ने खाई, तो वह बड़ी मीठी और ठण्ढी-ठण्ढी मालूम हुई। मिश्री की शक्ल भी हीरे से मिलती-जुलती है। चोर ने मौक़ा देखकर कहा—है न ये हीरा मीठा ? तुम्हें जो हीरा साहूकार ने दिया है, उसे तो चखकर देखो कैसा है ? मूर्खराज ने उसे ज़बान से लगाया, तो कोई स्वाद मालूम न हुआ, ख़ाली चमक ही उसमें थी।

मूर्खराज ने कहा—इसमें तो कोई स्वाद नहीं मालूम होता।

यह सुनकर चोर बोला—भाई, तुम्हारे साथ उस साहूकार ने धोखा किया। मामूली हीरा जब मीठा और ठण्ढा होता है, तो एक हज़ार का हीरा तो बहुत मीठा और ठण्ढा होना चाहिए। यह नक़ली है, फेंक दो इसे।

मूर्खराज ने तुरन्त ही उसे फेंक दिया। चोर ने आँख बचाकर उसे उठा लिया और मूर्खराज को बातों में लगाकर चलता बना।

प्रातःकाल होते ही मूर्खराज घर की ओर लौटे। घर पर बहिन बड़ी चिन्ता में थी कि कल से उसका पता नहीं है, कहाँ गया होगा। इसी समय मूर्खराज आ पहुँचे। बहिन पूछने लगी—भैया, कल से तू कहाँ था, तेरे बिना मैंने खाया नहीं। यह कहते-कहते वह आँखों में आँसू भर लाई और कहने लगी—बड़ी चिन्ता थी, भूख के मारे मर गई !

बहिन मर गई

'मर गई' शब्द सुनकर मूर्खराज ज़ोर से रो पड़े। कहने लगे—"हाय बाप रे, मेरी बहिन मर गई, मेरी बहिन मर गई ! अब मैं क्या करूँगा !" यह रोना सुनकर पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए और पूछने लगे—क्या हुआ है, क्यों रोता है ?

मूर्खराज बोले—मेरी बहिन मर गई, इसलिए मैं राता हूँ। बहिन को घर में सही-सलामत देखकर लोगों ने कहा—अरे, तेरी बहिन तो मज़े में है, तू क्यों रोता है ?

मूर्खराज कहने लगे—बहिन ने ही कहा था कि मैं मर गई, वरना क्या मैं पागल हूँ या मुझे मेरी बहिन प्यारी नहीं लगती, जो मैं व्यर्थ में रोता।

लोगों ने कहा—मूर्ख कहीं के, उसने योंही कह दिया होगा। मरा हुआ कहीं हिलता-डुलता या बोलता-चालता है।

मूर्खराज ने आश्चर्य के साथ पूछा—ओहो ! क्या ऐसी बात है ? मरा हुआ हिलता-डुलता या बोलता-चालता भी नहीं है ?

लोग मूर्खराज की बात पर हँसते हुए अपने घर गए।

घर मर गया

शाम हुई, भोजन आदि से निबट कर सब सो गए। मूर्खराज अपने बिस्तरे पर पड़े-पड़े किसी उधेड़-बुन में लगे हुए थे। सोचते-सोचते उन्हें ख़याल आया कि अपना मकान ज़रा भी हिलता-डुलता नहीं और न बोलता-चालता ही है। कहीं बेचारा मर तो नहीं गया। यह विचार करके वे बिस्तर से उठे और घर को आवाज़ देने लगे। कोई जीवधारी प्राणी होता तो बोलता। बेचारा जड़ मकान क्या बोलता। मूर्खराज को निश्चय हो गया कि अवश्य ही घर मर गया है। उन्होंने तुरन्त एक कपड़े का पलीता बनाकर उसे मिट्टी के तेल में भिगोया और जिस प्रकार अपनी माता का अग्नि-संस्कार किया था, मकान का भी करने लगे। मकान जलने लगा। आप आकर अपने बिस्तर पर लेट गए। मुहल्ले वालों ने छप्पर को जलते देखा, तो 'आग लगी, आग लगी' कहकर दौड़ आए और बड़ी मुश्किल से आग को शान्त किया। अधिक हानि तो नहीं हुई, ऊपर का छप्पर ही जल पाया था। इस तमाशे को देखकर मूर्खराज बड़े प्रसन्न थे। मन ही मन सोच रहे थे कि जिस प्रकार माँ के बारहवें में अच्छी-अच्छी चीजें खाने को मिली थीं, उसी प्रकार मकान के बारहवें में भी खाने को मिलेंगी। मूर्खराज की यह हालत थी, परन्तु बहिन के होश उड़ गए थे।

राज-दरबार में

प्रातःकाल होते ही सिपाही आए और उसे मकान में आग लगाने के अपराध में राजा के पास पकड़ ले गए। मूर्खराज बड़ी शान से खड़े हो गए। चारों ओर देखने लगे और राजा के मोटे शरीर को देखकर मन ही मन कुछ विचार करने लगे। दरबार में बैठे हुए लोगों ने मूर्खराज की हरकत देखकर कहा—अरे! चारों ओर क्या देख रहा है? क्या यहाँ भी आग लगाने की सोच रहा है?

दरबारियों की यह बात सुनकर मूर्खराज ने उत्तर दिया—नहीं साहब, आग लगाने की तो मैं नहीं सोच रहा हूँ; परन्तु यह सोच रहा हूँ कि, राजा साहब तो इतने मोटे हैं और दरवाज़ा बहुत सकड़ा है। अगर ये मर गए तो इन्हें बाहर कैसे निकाला जायगा, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।

मूर्खराज की यह बात सुनकर सभी लोग मन ही मन हँस पड़े; परन्तु अन्त में इस असभ्यता के लिए सबको बड़ा क्रोध आया। राजा थे बड़े दयावान्। उन्होंने समझ लिया कि ये मूर्ख है; अतएव उसे छुड़ा दिया और हिदायत कर दी कि आयन्दा वह ऐसा न करे। वे जानते थे कि मूर्ख तथा पागल को सज़ा देना और न देना बराबर है।

उधर मूर्खराज को पकड़ कर ले गए और इधर उसकी

बहिन बेचारी बैठी-बैठी रो रही थी कि न जाने उसकी वहाँ क्या हालत होगी ? क़ैद किया होगा या बाँधकर पीटा जा रहा होगा। वह विचार कर ही रही थी कि इसी समय मूर्खराज आ पहुँचे। मूर्खराज, मूर्खराज थे अवश्य, पर आख़िर उसके भाई थे; इसलिए वह बड़ी प्रसन्न हुई।

मूर्खों के सरदार

कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हुआ। मूर्खराज की बहिन भी मर गई थी। अकेले घर में मूर्खराज को अच्छा न लगता; इसलिए एक दिन उसने विचार किया कि चलो कहीं यात्रा की जाय। आपने द्वारका की यात्रा करने का विचार किया। कुछ कपड़े, कुछ रुपए और कुछ आवश्यक सामान की एक गठरी बाँधकर आप चल दिए। चलते-चलते आप दस-बारह कोस निकल आए। शाम को एक नगर के पास आ पहुँचे। इस नगर का नाम मूर्खपुरी था, और बिलकुल सही था। मूर्खराज मूर्खपुरी के चौरास्ते की एक धर्मशाला में ठहरे। खाने-पीने का सामान साथ ही था, खा-पीकर सो गए। एक गठरी पहले गवाँ चुके थे, इसलिए आप इस बार गठरी को सिर के नीचे रखकर सोए।

प्रातःकाल हुआ। पिछली रात थोड़ा पानी बरस गया था, अतः मार्ग में कीचड़ हो रहा था। कीचड़ में हाथी के पैरों के निशान ज्यों के त्यों बने हुए थे। मूर्खपुरी के लोग उधर से निकले तो हाथी के पैरों के निशान देखकर बड़े अचम्भे में आए और सोचने लगे कि आख़िर ये किस चीज़ के निशान हैं? किसी की समझ में नहीं आ रहा था। इतने में हमारे मूर्खराज भी उधर से आ निकले। भीड़ देखकर वे भी रुक गए और पूछने लगे—सब लोग क्यों जमा हैं? क्या

देख रहे हैं ? क्या पूछना चाहते हैं ? इतना आश्चर्य किस लिए है ?

लोगों ने कहा—भाई, यह समझ में नहीं आता कि ये इतने बड़े-बड़े निशान किस चीज़ के हैं !

मूर्खों के सरदार मूर्खराज ने कहा—ओ हो ! इसमें क्या रक्खा है। आपने अभी तक नहीं समझा। कोई बकरी किसी के घर में घुस गई और चक्की में आटा खाने लगी। चक्की के पाट में उसने मुँह डाला, गर्दन फँस गई। वह बाहर भागी। यहाँ आकर कीचड़ में फँस गई और चक्की के पाट के ये निशान बन गए, समझे !

सब लोग सिर हिलाने लगे। जैसे एक बड़ा भारी भ्रम दूर होगया हो। सब लोग कहने लगे—भाइयो, यह तो कोई बड़ा बुद्धिमान् पुरुष मालूम होता है। इसी ने हमारी एक बहुत बड़ी शङ्का का समाधान किया है। ऐसा चतुर आदमी हमारे गाँव में अवश्य ही रहना चाहिए। किसी प्रकार इसे यहीं रखकर गाँव का पटेल बना देना चाहिए। पटेल ऐसा ही होशियार आदमी होना चाहिए।

यह शुभ विचार सबकी समझ में आ गया, इसलिए सबने मिलकर मूर्खराज से कहा—आप इसी गाँव में रहिए। हम सब आपको इस गाँव का पटेल बनाए देते हैं।

यह सुनकर मूर्खराज यात्रा जाना भूल गए। गाँव का मुखिया बनना किसे भला नहीं लगता, लोगों के निवेदन पर

तरस खाकर भाई साहब उसी गाँव में रह गए। आप पटेल बना दिए गए थे; अतएव गाँव के छोटे-मोटे सब मामले-मुक़द्दमे आपके पास आने लगे। मूर्खराज एक महान् कार्य में लग गए। आपके फ़ैसले भी चक्की के पाट की तरह होते थे। मूर्ख लोगों में मूर्ख सरदार, फिर कमी किस बात की! आनन्द ही आनन्द था।

मटके में भैंस

एक दिन की बात है, एक किसान की भैंस उसके घर में घुस गई। उस घर में बड़ा सा एक मटका रक्खा हुआ था। मटके में गेहूँ थे। भैंस ने मटके में मुँह डालकर गेहूँ खाना शुरू किया। जब उसने मटके में मुँह ज्यादा बढ़ाया, तो मटका उसके सिर में फँस गया। किसान ने जब यह देखा तो बहुत घबड़ाया। अनेक प्रयत्न किए; पर निकाल न पाया। मूर्खपुरी के निवासी तो थे ही, फिर अक़्ल का क्या कहना ? आपको सूझ हुई कि चलो, नए पटेल के पास चला जाय, वे बड़े चतुर हैं—बुद्धिमान् हैं,कोई उपाय बतला देंगे। आख़िर वह पटेल मूर्खराज के पास पहुँचा और सब क़िस्सा कह सुनाया।

मूर्खराज ने कहा—यह कौन सी बड़ी बात है, चलो मैं अभी चलता हूँ और मटका निकाले देता हूँ।

किसान मूर्खराज को लेकर घर आया। भैंस का सिर मटके में फँसा हुआ था। वह दिखलाया। मूर्खराज ने देखा कि भैंस के दोनों सींग उसमें अटके हुए हैं, वें मटके को निकलने नहीं देते। उन्होंने तुरन्त आरी मँगवाई। भैंस के दोनों सींग कटवा डाले। पहले तो उनका विचार गरदन काटकर ही मटका अलग करने का था, किन्तु रक्तपात का ख़याल करके उन्होंने सिर्फ़ सींग ही कटवाए। भैंस के

सिर को ज़रा दबाया और सारा सींग मटके में समा गया। मटके का निकलना कठिन होगया। बहुत कोशशि की गई, और जब अन्त तक सफल न हुए तो मूर्खराज ने विचार किया कि घड़े को फोड़ दिया जाय। ज़ोर से डण्डा मारा गया, घड़े के टुकड़े-टुकड़े होगए, गेहूँ भी ज़मीन में फैल गए। चट मूर्खराज ने कहा—देखो न, सिर निकल आया।

किसान भी मूर्खराज से कम न थे, मूर्खपुरी के रहने वाले थे, मूर्खराज की इस करतूत पर बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे—पटेल साहब, आपने बड़ी कृपा की, अन्यथा बड़े कष्टों का सामना करना पड़ता।

मूर्खराज हँसते हुए अपने घर चले आए। अपने साथियों में किसान ने मूर्खराज की बड़ी प्रशंसा की और कहा—भाइयो ! अपने गाँव में जो पटल आए हैं, बड़े ही बुद्धिमान् हैं, बड़े ही चतुर हैं। कल मेरी भैंस का सिर मटके में फँस गया था, यदि वे न होते ता कभी न निकलता। हम लोगों का बड़ा भाग्य है कि हमें ऐसे बुद्धिमान् पटेल मिल गए, अन्यथा ऐसे आदमी मिलते कहाँ हैं ?

सब लोग बड़े ख़ुश हुए, अपने भाग्य को सराहने लगे।

मूर्खराज की सवारी

मूर्खराज की बुद्धिमानी के समाचार राजा के कानों तक पहुँचे। राजा बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे—बड़े हर्ष की बात है कि मेरे राज्य में ऐसे बुद्धिमान् लोग आकर निवास करने लगे हैं। राजा ने मन्त्री को आज्ञा दी कि पटेल को सवारी के लिए घोड़ा भेजो और सम्मान-सहित बुलवा भेजो, हम भी तो देखें उनकी बुद्धि का चमत्कार। बुद्धिमानों की प्रतिष्ठा करनी ही चाहिए। राजा की आज्ञानुसार चार सिपाही घोड़ा लेकर पटेल के पास पहुँचे और कहा—चलिए, आपको राजा साहब ने स्मरण किया है।

मूर्खराज राजा के सम्मान से बड़े खुश हुए। मन में फूले न समाए। नहाए-धोए, भोजन किया और कपड़े पहने। सिपाहियों से घोड़ा कसकर लाने को कहा। सिपाही घोड़ा ले आए। घोड़े की लगाम एक सिपाही के हाथ में थमाकर आप फ़ौरन घोड़े की दुम की ओर मुँह करके उस पर बैठ गए। सिपाहियों से घोड़ा हाँक ले चलने को कहा। मूर्खराज-पटेल की यह सवारी देखने के लिए मूर्खपुरी के अनेकानेक सज्जन इकट्ठे हुए। बड़ी भीड़ लगी थी। मूर्खराज-पटेल की औंधी सवारी देखकर सब लोग एक दूसरे का मुँह ताक रहे थे। कह रहे थे, घोड़े पर बैठते हुए हमने अनेकों को देखा, पर इन पटेल साहब की तरह हमने

किसी को नहीं देखा। क्या अजीब सवारी है! हममें इतनी बुद्धि कहाँ कि हम बैठते। देखो न, हम आगे मुँह करके घोड़े पर बैठते हैं; किन्तु यदि कोई पीछे से हमला करे तो हम क्या कर सकते हैं? पर पटेल साहब बड़े होशियार हैं। सामने सिपाहियों को कर दिया, पीछे मुँह करके आप बैठ गए, अब कोई कैसे हमला करेगा? इसी का नाम है बुद्धिमानी। इस प्रकार बातें करते-करते सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

राज-दरबार में मूर्खराज

आखिर मूर्खराज की सवारी राज-दरबार में पहुँची। राजा ने दूर ही से मूर्खराज को घोड़े पर बैठे हुए आते देखा। मूर्खराज की घुड़सवारी पर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वे मन ही मन कहने लगे—इस तरह की सवारी तो मुझे भी नहीं मालूम। वास्तव में यह तो बड़ा बुद्धिमान् मालूम होता है। मेरी प्रजा को धन्य है कि उसने अपने गाँव में ऐसे बुद्धिमान् को स्थान दिया और अपना मुखिया बनाया। मैं सोचता हूँ, यदि ऐसे आदमियों को गाँव का न्यायाधीश बना दिया जाय, तो बड़ा अच्छा है। राजा मन में ऐसा विचार कर ही रहे थे कि मूर्खराज आ पहुँचे। राजा ने मूर्खराज का बड़ा स्वागत किया और अपने निकट बिठलाया। पूछा—कहिए, आप प्रसन्न तो हैं, आपके बाल-बच्चे तो राजी हैं ?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—गाँव में अभी ज्वर फैला हुआ है, इसलिए बहुत लड़के बीमार हैं।

राजा ने फिर पूछा—घर के लोग आपके साथ ही हैं या गाँव पर हैं ?

मूर्खराज ने कहा—जी ! वे तो सब विधवा होने के लिए गए हैं।

राजा अपने दोनों प्रश्नों के उचित उत्तर पाकर बहुत

प्रसन्न हुए। मूर्ख के यहाँ मूर्ख मेहमान हुए, फिर आनन्द का क्या ठिकाना है। 'मिले सूर को सूर, हुए दुःख सब दूर।'

न्यायाधीश के पद पर

इस तरह बातचीत करते-करते थोड़ी देर बाद राजा ने कहा—पटेल, तुम बड़े बुद्धिमान् मनुष्य हो, इसलिए तुम्हें गाँव की फ़ौजदारी अदालत का न्यायाधीश बनाया जाता है। कल से आपको अदालत में बैठना चाहिए और फ़ैसले करने चाहिए।

यह सुन कर मूर्खराज बोले—बहुत अच्छा महाराज, आपकी आज्ञा सिर-माथे पर है।

पटेल की यह बात सुनकर राजा बोले—सिर पर न उठाओ पटेल, वज़न मालूम होगा।

पटेल ने कहा—नहीं, इसकी चिन्ता नहीं है, मेरे साथ घोड़ा है, उस पर लाद लूँगा।

इतना कहकर पटेल घर आए। रात हुई, खा-पीकर सो गए। प्रातःकाल जल्दी उठे, नित्य-कर्मों से निबटे, भोजन किया, कपड़े पहने और अदालत की तरफ़ चल दिए। उनका सिर घुटा हुआ था और आज आपने नङ्गे सिर ही जाने की ठानी थी। लोगों ने तेज़ी से नङ्गे सिर जाते हुए देखा तो पूछा—पटेल साहब, आज नङ्गे सिर कहाँ जा रहे हैं? क्या आज पगड़ी धोने डाली है?

मूर्खराज ने कहा—ऐसी ही इच्छा होगई, क्योंकि आज से मैं फ़ौजदारी अदालत का न्यायाधीश बना दिया गया हूँ।

एक आदमी ने कहा—यह बड़ी अच्छी बात है; किन्तु घुटे हुए सिर से बैठना तो अच्छा नहीं मालूम होगा।

मूर्खराज के पैरों में बड़े-बड़े जूते थे। एक जूता उतार कर तुरन्त आपने टोपी की तरह सिर पर रख लिया और आगे बढ़े।

थोड़ी ही देर में मूर्खराज अदालत में जा पहुँचे। गाँव के नए पटेल को न्यायाधीश की पदवी पर नियुक्त देखकर मूर्खपुरी के मनुष्य बड़े खुश हुए। कहने लगे—अब हमारा न्याय ठीक-ठीक हुआ करेगा। ऐसी जिम्मेदारी की जगह पर ऐसे ही न्यायाधीश की आवश्यकता थी। राजा साहब बड़े समझदार हैं।

इस प्रकार बातचीत करते हुए सब अपने-अपने कामों में लग गए। अब हमारे पाठक मूर्खराज के न्याय का भी नमूना देख लें।

मूर्खराज का न्याय

एक दिन एक बड़ी विचित्र घटना घटित हुई। गाँव में एक बुढ़िया रहती थी, उसके चार लड़के थे। एक दिन रात को वे चारों चोरी करने निकले। रात घोर अँधेरी थी। चारों चोर एक बनिए के मकान के आगे आए और दीवार में सेंध लगाना शुरू किया। उनके दुर्भाग्य से दीवार बहुत पतली और ताज़ी बनी हुई थी। दीवार गिर पड़ी। चारों उसमें दब गए। दीवार के गिरने का धमाका हुआ, तो मकान का मालिक और पड़ोसी जाग पड़े। बाहर आए। मकान का मालिक हाथ में लालटेन लिए हुए था। सबने बाहर आकर देखा, तो नई दीवार टूटी पड़ी है, और उसमें चार चोर दब मरे हैं। प्रातःकाल होते ही सारे गाँव में यह बात फैल गई। रात भर से लड़कों को न आए हुए देखकर बुढ़िया घबड़ा गई थी। चोरों के दब मरने की बात सुनी तो वह भी देखने के लिए पहुँची। देखा तो उसके चारों लड़के मरे पड़े हैं। बुढ़िया मूर्च्छित हो गई। बड़ी देर में उसे होश आया। होश आते ही नए न्यायाधीश के पास वह फ़रियाद लेकर पहुँची। कहा—सरकार, मेरे चारों लड़के मन्नू बनिए के यहाँ चोरी करने गए थे। सेंध लगाते हुए दीवार गिर गई, चारों दब मरे। मेरा घर चौपट हो गया। रक्षा करने वाला कोई न रहा। मन्नू को सज़ा होनी चाहिए, क्योंकि उसने

राजा को फाँसी

अदालत ने मज़दूर से कहा—तुम चाहे न गए हो, पर काम तो यही करते हो। इसलिए तुम्हें ही फाँसी पर जाना होगा।

यह सुनकर मज़दूर ने समझ लिया कि ये निरे मूर्ख हैं, इसलिए तरकीब से काम लेना चाहिए। उसने कहा—हुज़ूर, इसमें मेरा कोई अपराध नहीं। पानी छोड़ने वाले भिश्ती का अपराध है। इसलिए उसे दण्ड मिलना चाहिए।

अदालत ने कहा—अच्छा, उसे बुलाया जाय।

भिश्ती उपस्थित किया गया। अदालत ने उससे कहा—तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है, इसलिए तुम्हें फाँसी का दण्ड दिया जाता है।

भिश्ती बोला—हज़ूर मेरा अपराध नहीं है, क्योंकि उस दिन राजा साहब की सवारी बाज़ार से निकली थी। मैं उधर देखने लगा। हुज़ूर ही सोचें इसमें मेरा क्या अपराध है ?

भिश्ती की तक़रीर सुनकर न्यायाधीश मूर्खराज ने राजा को फाँसी देने के लिए बुलाया। राजा अदालत में उपस्थित हुए। राजा से कहा गया—आपकी सवारी बाज़ार से निकली, इसलिए इस भिश्ती ने आपकी ओर देखा, इससे मिट्टी में पानी ज्यादा पड़ गया। दीवार कमज़ोर चुनी

गई। सेंध लगाते ही वह गिर पड़ी और इस बुढ़िया के चारों लड़के दब मरे। आपका ही ज्यादा अपराध है। आपको फाँसी का दण्ड दिया जाता है।

न्यायाधीश की यह आज्ञा सुनकर राजा ने कहा—आपने जो न्याय किया है, वह बिलकुल उचित है, मैं इसे स्वीकार करता हूँ।

इसके बाद न्यायाधीश ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि राजा को फाँसी पर चढ़ा दिया जाय।

मूर्ख सिपाही राजा को फाँसी के तख़्ते पर ले गए। फाँसी डाली गई। परन्तु सिपाही भी मूर्ख थे। फाँसी की रस्सी को उन्होंने नहीं देखा कि यह कमज़ोर है। खींचते ही वह टूट गई। उस समय यह नियम था कि जो फाँसी पर से एक बार बच जाय, उसे दुबारा फाँसी न दी जाय। राजा भाग्यवान् थे। फाँसी की डोरी टूट गई, वे साफ़ बच गए। परमेश्वर जिसकी रक्षा करने वाला है, उसे कौन मार सकता है। राजा अपने महल में गए। बुढ़िया भी इस उचित न्याय से प्रसन्न होकर घर आ गई। स्नेही-सम्बन्धियों को बुला कर छोकरों को निकलवाया और अग्नि-संस्कार कराया। इसके पश्चात् सब अपने-अपने घर चले गए।

महँगा माल

इसके पश्चात् बहुत समय व्यतीत हो गया। मूर्खपुरी पर ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट ने क़ब्ज़ा कर लिया। लोग पढ़-लिख कर सुधरने लगे। मूर्खपुरी पर क़ब्ज़ा करने के लिए जब मूर्खपुरी के राजा और अङ्गरेजों में लड़ाई हो रही थी, तभी मूर्खराज भाग गए थे। अब वे लौट आए। घर में आकर देखा तो बुरी हालत थी। सूना घर देखकर चोर सब कुछ निकाल ले गए। पैसा भी नहीं बचा था, जिससे मूर्खराज अपना गुज़र करते। जब खाने-पीने का कोई चारा न रहा, तो मूर्खराज अपनी बड़ी बहिन के यहाँ जा पहुँचे। मूर्खराज के जीजा ने सोचा, अब यह कुछ समझदार हो गया होगा, इसलिए उसे अपने व्यवसाय में लगा लिया। कुछ दिनों पश्चात् एक बड़ा जहाज़ भरकर बन्दर पर लगाने के लिए तैयार किया गया। सेठ अमरसिंह ने मूर्खराज से कहा—इस जहाज़ को किसी बड़े बन्दर पर ले जाकर रोको और जहाँ अच्छा दाम मिले, सब माल बेच दो। अपने माल से जो रुपए मिलें उनसे वहाँ की कोई महँगी चीज़ ख़रीद लाओ। सावधान रहना, किसी दलाल के धोखे में न आना।

इस प्रकार समझाकर मूर्खराज को जहाज़ पर सवार कराया। जहाज़ चल दिया। थोड़े ही दिनों में जहाज़ लङ्का

जा पहुँचा। किनारे लगा। उस समय ऐसा नियम था कि जो कोई व्यापारी माल लेकर आता, उसे नगर में सूचना देने के लिए तोप दाग़नी पड़ती थी। इससे उस नगर के व्यापारी समझ जाते कि माल भरकर कोई जहाज़ आया है। दलाल और व्यापारी आ पहुँचते। मूर्खराज ने भी तोप दग़वा दी, दलाल और व्यापारी आ पहुँचे। जहाज़ पर गए और माल देखकर सब ख़रीद लिया। रुपए चुका दिए। शाम पड़ गई, इसलिए खा-पीकर मूर्खराज जहाज ही में सो रहे।

महँगे प्याज़

दूसरे दिन प्रात:काल ही मूर्खराज उठे और महँगी चीज़ की खोज में शहर में गए। देखते-देखते मालूम हुआ कि सोना-चाँदी तो यहाँ बहुत ही सस्ता बिकता है, इसलिए इसे नहीं ख़रीदना चाहिए। प्याज़ यहाँ बहुत महँगे हैं, यहाँ पैदा नहीं होते, इसलिए पाँच-पाँच रुपए को एक-एक मिल रहे हैं। मूर्खराज ने जब यह ख़ूब समझ लिया कि प्याज़ ही महँगी चीज़ है, तो सब रुपयों का प्याज़ ख़रीद लिया। प्याज़ से जहाज़ भरकर तीसरे रोज़ घर लौटे। कुछ ही दिनों में अपने गाँव आ पहुँचे। जहाज़ के बन्दरगाह पर पहुँचते ही तोप दग़वाई गई। अमरसिंह सेठ ने तोप की आवाज़ सुनी, तो मन में बड़े ही प्रसन्न हुए उन्होंने सोचा, माल बेचकर साले जी कोई अच्छा महँगा माल भरकर लाए होंगे—ख़ासे दाम खड़े होंगे। उन्होंने मुनीम जी को साथ लिया और बन्दरगाह पर पहुँचे। तोप की आवाज़ सुनकर गाँव के और भी कई बड़े-बड़े व्यापारी और दलाल आ पहुँचे थे।

पाँच रुपए का एक प्याज़

जहाज़ से कुर्सियाँ निकाल कर बाहर डाली गईं। सेठ अमरसिंह और आए हुए अन्यान्य सब व्यापारी दलाल बैठ गए। मूर्खराज भी जहाज़ से उतरकर नीचे आए और एक कुर्सी पर बड़ी शान के साथ बैठ गए। इस समय मूर्खराज बहुत ही ख़ुशनुमा मालूम पड़ते थे। सेठ अमरसिंह ने उनकी ओर देखकर कहा—तुम जो क़ीमती माल ख़रीदकर लाए हो, उसका नमूना मँगाओ।

बहुत अच्छा, कहकर मूर्खराज ने नौकर से एक टोकरी भरकर नमूना ले आने को कहा। तुरन्त ही नमूना आ गया और सेठ के आगे रक्खा गया। नमूना देखकर सेठ जी सन्न रह गए। क्रोध चढ़ आया। डपटते हुए बोले—मैंने तुमसे महँगा माल खरीद लाने को कहा था, तुमने यह क्या किया? यही महँगा माल है?

मूर्खराज ने कहा—जी, यही महँगा माल है। मैंने बड़े दाम ख़र्च किए हैं। एक-एक प्याज़ के पाँच-पाँच रुपए देने पड़े हैं। इससे और क्या महँगा माल होता? चाँदी-सोना तो वहाँ बहुत सस्ता मिलता था। उसे मैंने नहीं ख़रीदा; क्योंकि आपने महँगा माल ही ख़रीदने के लिए मुझसे कहा था, तब भला सस्ता मैं कैसे ख़रीद लेता?

यह सुनकर सेठ ने कहा—बेवक़ूफ़ कहीं के, अगर वहाँ

कोई चीज़ सस्ती हो, और उसके दाम हमारे देश में ज़्यादा आते हों, तो वह चीज़ लानी चाहिए, या जो चीज़ हमारे यहाँ से जाती है, उसे ख़रीद लाना चाहिए था ? चाँदी-सोना छोड़कर पैसे के पाँच सेर वाले प्याज़ तू क्या सोच कर ख़रीद लाया ?

यह सुनकर मूर्खराज मौन हो गए। एक शब्द भी उनकी ज़बान से नहीं निकला। सेठ अमरसिंह मूर्खराज की इस कार्रवाई से उन व्यापारियों के आगे बड़े लज्जित हुए। चेहरे का रङ्ग फ़ख़ हो गया। बेचारे व्यापारियों को भी बड़ा खेद हुआ। कहने लगे—जो हुआ सो हो गया, अब धैर्य धारण कीजिए। आगे ऐसे आदमी को कोई काम न सौंपिए।

इस प्रकार समझा कर सब अपने-अपने घर चले गए। सेठ अमरसिंह भी मुनीम जी के साथ घर लौट आए। सब हाल सेठानी को सुनाया। अपने भाई की ज्ञान-गरिमा सुन कर सेठानी भी बड़ी लज्जित और दुखित हुई। उसे जो आशा थी कि वह कोई अच्छा माल ख़रीदकर लाएगा और उससे अच्छा लाभ होगा, वह नष्ट हो गई। मूर्खराज बिलकुल उसके मन से उतर गए। यह निश्चय कर लिया कि अब कभी कोई ऐसा काम इसे नहीं सौंपा जाय।

इधर लज्जा के मारे मूर्खराज भी जमीन में गड़े जा रहे थे। उन्हें चिन्ता थी कि घर जाएँगे, तो जरूर ही बहिन खरी-खोटी सुनाएगी। इसलिए कहीं अब चल देना चाहिए।

मूर्खराज एक गाँव की ओर चल पड़े। कुछ रुपए भी उनके पास थे। कई गाँवों को तय करके वे एक नगर में जा पहुँचे। नगर के बाहर एक धर्मशाला थी, उसी में मूर्खराज ठहरे। बाजार में गए और वहाँ कुछ खाया-पिया। जब शाम हो गई, तब आपने एक वृक्ष की डाली तोड़ी और काट-छाँट कर हाथ में रखने के लिए एक लकड़ी बना ली। लकड़ी हाथ में ले आप घूमने के लिए निकले। चाँदनी रात थी। ग्रीष्म-काल था। ठण्ढी-ठण्ढी हवा बड़ा आनन्द दे रही थी। मूर्खराज रात भर घूमते रहे।

बग़ैर तनख़्वाह की नौकरी

दुर्भाग्य से उस नगर में रोज़ ही चोरियाँ हुआ करती थीं। चोर दूसरे गाँव से आया करते थे। रोज़ की तरह वे आज भी आए। हाथ में एक मोटी लकड़ी लेकर मूर्खराज को घूमते हुए देखा, तो समझे कि हम जो रोज़-रोज़ चोरी किया करते हैं, इसी से गाँव के राजा ने इस मनुष्य को पहरे पर तैनात किया है। अतएव यदि आज हम नगर में प्रवेश करेंगे, तो अवश्य पकड़े जाएँगे। इस भय से वे चोर उस दिन लौट गए। इधर मूर्खराज प्रातःकाल तक घूमते रहे। घूमते-घूमते थक गए। धर्मशाला में आए। आते ही नींद आ गई। दिन भर सोए। जब शाम हुई तो आप उठे और खाने-पीने का प्रबन्ध किया। खा-पीकर फिर आप घूमने लगे। आधी रात का समय हुआ होगा कि फिर चोर आए। कल की तरह आज भी उन्होंने मूर्खराज को पहरा देते देखा। इस प्रकार कई दिन बीत गए। चोर लोग चक्कर काटते-काटते थक गए। उन्होंने समझा कि राजा अब सावधान हो गए हैं। मालूम होता है, हमेशा के लिए उन्होंने पहरा लगा दिया है। अब दाल न गलेगी। यह सोचकर उन्होंने गाँव में आना छोड़ दिया। दूसरे गाँव में चोरी करने लगे।

इधर राजा सोचने लगे कि हमारे गाँव में नित्य चोरी

हुआ करती थी, अब कैसे बन्द होगई, कुछ समझ में नहीं आता। बहुत प्रयत्न किया, पर कोई पता नहीं लगा। आखिर एक रोज़ घोड़े पर बैठकर स्वतः राजा घूमने निकले। घूमते-घूमते वे वहाँ आ पहुँचे, जहाँ मूर्खराज एक मोटी लकड़ी हाथ में लेकर मटरगश्त कर रहे थे। मूर्खराज को घूमता देखकर राजा ने पूछा—तुम कौन हो? रात को क्यों घूम रहे हो?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—और कौन होता, मनुष्य हूँ। क्या दिखलाई नहीं पड़ता? क्या दिख रहा हूँ तुझे? सोच-समझ कर बातें कर, नहीं तो देखता है मेरा नामी सोंटा, तबीयत ठीक हो जायगी। नालायक़ कहीं का, चला जा यहाँ से।

मूर्खराज की इस प्रकार की अनोखी बातें सुनकर राजा ने सोचा—अवश्य ही यह कोई मूर्ख है। इसलिए उन्होंने शान्त करके समझाकर पूछा—भाई, तुम किस गाँव से आए हो? इस प्रकार क्यों घूम रहे हो?

मूर्खराज बोले—हाँ, इस प्रकार मनुष्यों की सी बातें करो, मैं अपनी बहिन के यहाँ से भाग आया हूँ। अनन्तपुर का रहने वाला हूँ, नाम है किशनसिंह। मुझे चाँदनी रात में घूमना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं रात को घूमता हूँ, और दिन में खा-पीकर धर्मशाला में सो रहता हूँ। और पूछो, क्या पूछना है?

राजा ने कहा—तुम्हारे इस प्रकार घूमने से मेरे गाँव को बड़ा सुख प्राप्त हुआ है, क्योंकि इस गाँव में रोज़ चोरियाँ होती थीं। मालूम होता है, वे तुम्हारे घूमने से ही बन्द हुई हैं। मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ, तुम जो चाहो, माँगो।

इनाम में गोबर

यह सुनकर मूर्खराज बहुत खुश हुए। उन्होंने समझा, जब राजा मुझसे बात कर रहा है, तो अब किस बात की कमी है। उन्होंने कहा—राजा साहब, यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो, तो जो मैं चाहूँ, वही देना पड़ेगा।

राजा ने कहा—जो तुम चाहोगे, वही मिलेगा।

यह सुनकर मूर्खराज बोले—धर्मशाला के पास बहुत सी गाएँ बैठा करती हैं, बहुत गोबर होता है। अगर तुम प्रसन्न हो, तो सब गोबर मुझे दिलाने का हुकुम दो। रत्तीभर भी कहीं न रहने पाए।

राजा ने पूछा—तुम गोबर क्या करोगे? दूसरी कोई वस्तु माँगो, तो मैं ख़ुशी से तुम्हें दूँगा।

मूर्खराज ने कहा—गोबर से मैं कण्डे पाथूँगा। इससे बहुत पैसे मिलेंगे। मेरा गुज़र चलेगा। यदि देना हो तो गोबर ही दिलाओ। व्यर्थ की बक-झक न करो। अपने घर का रास्ता लो। तुम क्या दे सकते हो?

राजा ने समझ लिया कि ये वास्तव में मूर्ख है। इसलिए एक सौ मोहरें उसे इनाम में दीं और कहा—मैं सबको हुकुम दे दूँगा कि सब गोबर तुम्हें दे दिया जाय।

इसके पश्चात् राजा अपने घर चले गए। उन्होंने मूर्ख-राज को गोबर देने का ढिंढोरा नहीं पिटवाया। मोहरों का

इनाम देकर ही वे चुपचाप हो गए। इधर मूर्खराज बाट जोह रहे थे कि राजा ढिंढोरा पिटवाएँगे। जब यह कुछ नहीं हुआ, तो मूर्खराज बड़े नाराज़ हुए। फिर अपने गाँव अनन्तपुर चले आए। मोहरें भुनवाकर अपना गुज़र करने लगे।

मूर्खराज किसान बने

थोड़े दिनों के बाद बहुत-कुछ पूँजी समाप्त हो गई। मूर्खराज सोचने लगे कि मोहरें तो समाप्त हो रही हैं, आगे क्या किया जायगा। इसी समय ढिंढोरा पीटता हुआ है एक सरकारी आदमी आ रहा था। ढिंढोरा का आशय था, जिसे ज़मीन जोतना हो वह कल दस बजे राज-दरबार में हाज़िर होवे। मूर्खराज ने मन में सोचा कि खेती करनी चाहिए, इससे भली-भाँति गुज़र हो सकेगा। यह निश्चय कर वह दूसरे दिन ठीक दस बजे राज-दरबार में पहुँचे। सौ रुपए लगान की ज़मीन लेकर आपने खेती करने का निश्चय किया। कुछ मोहरें बची हुई थीं। एक-दो मोहरें भुनाकर खेती का सामान जुटाया। खेती का काम शुरू हो गया।

जीवन भर में कभी बाप-दादों ने खेती नहीं की थी, तो मूर्खराज क्या करते? एक दिन उन्होंने किसी किसान को खेत में नाज फेंकते देखा। आप भी मुट्ठी भर-भर कर फेंकने लगे। नाज सब ऊपर ही पड़ा। सब चिड़ियाँ चुग गईं। मूर्खराज ने चौमासे भर फिर खेत में जाने का नाम नहीं लिया। वे समझे थे, एक बार जो खेत में बो दिया है, वह उगेगा, फलेगा, फूलेगा और पकेगा, समय पर काट लाएँगे। बरसात समाप्त हो गई। खेती काटने का वक़्त आया।

मूर्खराज खेत पर पहुँचे। देखा तो सन्न हो गए। खेत ज्यों का त्यों था। एक भी पौधा उसमें नहीं लगा था। मूर्खराज चुपचाप घर लौट आए। अब केवल पन्द्रह मोहरें बाक़ी रह गई थीं। यही मूर्खराज का अधार थीं।

लगान की वसूली

कुछ मास व्यतीत होते ही लगान की वसूली का समय आ पहुँचा। लगान वसूल होने लगा। सब लोगों ने दे दिया, परन्तु मूर्खराज क्यों देने लगे। राजा ने उन्हें पकड़ बुलाया और कहा—तुम्हारी लगान के सौ रुपए बाक़ी हैं, आज ही जमा करो।

मूर्खराज ने उत्तर दिया—साहब, मैं तो एक पाई भी नहीं दूँगा। मेरे खेत में एक दाना भी नहीं उगा है।

राजा ने कहा—सबके खेतों में तो हुआ, पर तुम्हारे ही खेत में क्यों नहीं हुआ? तुम झूठ बोलते हो।

राजा की फटकार से मूर्खराज बोले—सरकार, आप सिपाही भेजकर तलाश करवा लें, खेत में कुछ नहीं हुआ है।

सिपाही भेजा गया। उसने भी आकर यही कहा। यह सुनकर राजा बोले—इसने खेत में कुछ बोया ही नहीं तो पैदा क्या होता। जिस तरह सबने बोया था, यह भी बोता तो सबकी तरह इसके खेत में भी अन्न होता। बोया ही नहीं तो होगा क्या। रुपया न देने के लिए व्यर्थ की बातें बकता है। रुपया अवश्य देना पड़ेगा।

मूर्खराज बोले—सरकार, जो आपके जी में आए, सो कर लीजिए। मैं एक पाई भी नहीं दे सकता। मैंने आपका खेत बोया ही नहीं। आप भी तो यही कहते हैं।

जूते या प्याज़?

राजा ने कहा—तुमने खेत नहीं बोया, पड़ती रख छोड़ा, यह बहुत बड़ा अपराध किया। इसलिए तुरन्त सौ रुपए जमा करो या सौ जूते खाओ।

मूर्खराज बोले—न तो मैं रुपए जमा करूँगा, न जूते ही खाऊँगा। जूतों से चोट न लगेगी?

यह सुनकर राजा बोले—तो सौ प्याज़ खाओ।

मूर्खराज ने विचार किया कि यह बात ठीक है। प्याज़ खाऊँगा, तो पेट भी भरेगा और रुपया भी न देना पड़ेगा। यह सोचकर राजा से कहा—अच्छा लाइए, मैं प्याज़ ही खाऊँगा।

राजा ने सिपाही को आज्ञा दी कि ठीक सौ प्याज़ गिन कर लाओ और इसे खिलाओ।

सिपाही तुरन्त सौ प्याज़ एक टोकरी में भर लाया और मूर्खराज के आगे रख दिया। मूर्खराज ने कचड़-कचड़ खाना शुरू किया। दस-पन्द्रह प्याज़ खाए होंगे कि पेट भर गया। मूर्खराज बोले—सरकार, अब तो नहीं खाए जाते, पेट भर गया।

राजा ने कहा—तो फिर सौ जूते खाओ। केवल दस प्याज़ खाकर ही रुपए पचा जाना चाहते हो? दान के साथ दक्षिणा भी ले जाना चाहते हो?

यह सुनकर मूर्खराज ने कहा—अच्छा हुज़ूर, आपकी इच्छा है, तो जूते भी मार लीजिए। पर ज़रा ठहर जाइए। मुझे अँगरखा उतार लेने दीजिए, नहीं तो वह फट जायगा। मैं पहनूँगा क्या ?

यह कह कर मूर्खराज ने अँगरखा उतारा और तैयार हो गए। राजा ने सिपाहियों को हुक्म दिया—खूब ज़ोर-ज़ोर से सौ जूते लगाओ। सिपाही ने हाथ पकड़कर जूते झाड़ना शुरू किया।

दस-पन्द्रह जूते ही पड़े होंगे कि मूर्खराज रो पड़े। कहने लगे—सरकार, अब मुझसे जूते नहीं खाए जाते। बहुत चोट लगती है। यह साला सिपाही बहुत ज़ोर से मारता है।

राजा ने कहा—सब कुछ तुम्हें सहना पड़ेगा। नहीं सह सकते, तो रुपए जमा करो। जब मूर्खराज ने छुटकारे की आशा न देखी, तो कहा—एक सिपाही मेरे साथ भेज दिया जाय, मैं रुपए दे दूँगा।

राजा ने समझा कि अब ठिकाने आया। सिपाही साथ कर दिया। मूर्खराज ने मोहरें भुनाकर रुपए दे दिए। यह सब देखकर राजा और दरबारी कहने लगे—सचमुच यह किसान बड़ा मूर्ख है। प्याज खाए, जूते खाए और रुपया भी दिया। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या होगी।

मूर्खराज की नौकरी

मोहरें भुनाकर जब सौ रुपए राजा को दे दिए, तो मूर्खराज के पास बहुत थोड़े रुपए शेष रह गए। कुछ दिनों गुज़र किया। आख़िर जब भूखों मरने की नौबत आ गई तो घर में ताला लगाकर नौकरी के लिए दूसरे गाँव चल दिए। गाँव में पहुँचकर एक साहूकार के घर गए। कहा—सेठ जी, मुझे नौकर रखिएगा ?

सेठ जी को भी नौकर की ज़रूरत थी। उन्होंने पूछा—वेतन क्या लेगा ?

मूर्खराज बोले—शाम-सुबह पेट भर के रोटी खाऊँगा और मुझे कुछ नहीं चाहिए।

सेठ जी भी बड़े लोभी थे, तुरन्त राजी हो गए और मूर्खराज को नौकर रख लिया। परन्तु उससे स्वीकार करा लिया, जो कहा जायगा वही वह करेगा। मूर्खराज ने स्वीकार करते हुए कहा—जी हाँ, जो आप कहेंगे, वही मैं करूँगा। कभी आपकी आज्ञा को नहीं टालूँगा। इसके पश्चात् मूर्खराज काम में लग गए। सेठानी और सेठ जो-जो आज्ञा देते, वही करते, सुबह-शाम डटकर खाते, और फटे-पुराने कपड़े पहनकर आनन्द से दिन बिताते। मूर्खराज तो थे ही, यहाँ भी आपने अपने पराक्रमों का परिचय दिया। आगे की घटना से सब प्रकट हो जायगा।

दुशाला

एक दिन सेठ जी ने हवाखोरी के लिए जाने का विचार किया। मूर्खराज से कहा कि जाओ घोड़ा कसवाकर ले आओ। मूर्खराज सईस के पास पहुँचे और घोड़ा कसवाकर ले आए। सेठ जी घोड़े पर बैठ गए और मूर्खराज से पीछे-पीछे आने को कहा। घोड़ा दौड़ा दिया। घोड़ा दौड़ाने की धुन में सेठ जी को यह ख्याल नहीं रहा कि उनके कन्धे से दो सौ रुपए के मूल्य का दुशाला गिर गया है। बग़ीचे में आकर घोड़े को थामा। देखा, दुशाले का पता नहीं है। इतने में मूर्खराज भी आ पहुँचे। उससे सेठ ने पूछा—जो दुशाला रास्ते में गिर गया है, वह तुमने देखा?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—जी हाँ, मैंने गिरते देखा तो था, परन्तु उठाया नहीं, क्योंकि नौकर रखते वक़्त आपने प्रतिज्ञा करा ली थी कि जो कुछ कहा जाय वही करना। मैं कैसे उठा लेता? आपकी आज्ञा को भङ्ग कैसे करता?

सेठ बोले—बेवक़ूफ़ मूर्ख, ऐसे समय आज्ञा की क्या आवश्यकता? जो चीज़ गिर जाय, उसे उठाना ही चाहिए। तेरी बुद्धि कहाँ भ्रष्ट हो गई?

यह सुनकर मूर्खराज ने कहा—जो चीज़ गिर जायगी, अब उसे मैं अवश्य उठा लिया करूँगा। आपके आदेश की प्रतीक्षा नहीं करूँगा। इस बार मुझे क्षमा कीजिए।

सेठ जी दुशाले के खो जाने से बड़े ही दुखी थे। परन्तु खोई हुई चीज़ कैसे मिल सकती थी।

दोनों जने घर लौट आए। एक दिन सेठ जी फिर बग़ीचे की ओर चले। घोड़े पर बैठते समय दुशाला मूर्खराज को थमा दिया। क्योंकि कहीं आज फिर न गिर जाय। यह भी उसी मूल्य का था।

दुशाले में लीद

दौड़ते-दौड़ते घोड़ा रुक गया और लीद करने लगा।

मूर्खराज ने दूर से देखा तो दौड़ते-दौड़ते आए और दुशाला बिछाकर सब लीद बाँध ली और बग़ीचे में पहुँच कर सेठ जी के आगे उसका ढेर लगा दिया। मूर्खराज बड़े प्रसन्न थे। सोच रहे थे, आज मैंने इनका यथार्थ आज्ञा-पालन किया है, ये खूब प्रसन्न होंगे। सेठ जी ने लीद का ढेर देखा तो बोले—अरे मूर्ख, ये क्या किया? दो सौ रुपए के दुशाले में ये लीद बाँधकर क्यों लाया? इसकी क्या आवश्यकता थी? और आवश्यकता भी थी तो कहीं दुशालें में लीद बाँधी जाती है? दुशाले का सत्यानाश कर डाला। नालायक़ कहीं का, तुझे कुछ अक़ल नहीं है।

यह सुनकर मूर्खराज ने उत्तर दिया—हें-हें-हें-हें, सरकार आप ही ने तो उस रोज़ कहा था कि जो चीज़ गिर जाय उसे उठा लेना चाहिए। लीद गिरी, मैंने उठा ली। न उठाता तो आपकी आज्ञा भङ्ग होती।

सेठ बोले—अभागे, लीद भी उठाने की वस्तु है? तेरी बुद्धि कहाँ चली गई? गँवार कहीं के।

सेठ की इस धमकी से मूर्खराज बहुत डर गए, क्षमा माँगने लगे। कहने लगे—अब ऐसा कभी न करूँगा। आज का अपराध क्षमा कीजिए।

मूर्खराज के गिड़गिड़ाने पर सेठ जी को दया आ गई। उन्होंने कहा—ख़बरदार, आज से ऐसा कभी न करना।

मूर्खराज बोले—बहुत अच्छा सरकार।

बालक की धुलाई

बहुत दिन इसी प्रकार बीत गए। सेठ जी के एक दो वर्ष का बालक था। खेलते-खेलते पाख़ाना फिर दिया। सेठानी भोजन में लगी हुई थीं। मूर्खराज को बुलाकर कहा—ज़रा इसे धुला तो लाओ, मैं भोजन में लगी हूँ। मूर्खराज बालक को लेकर सहन में गए और जिस तरह रोज़ धोतियाँ पछाड़कर धोया करते थे, उसी प्रकार धोने का विचार करने लगे। ज्योंही गरदन पकड़ कर पछाड़ने जा रहे थे, त्योंही अचानक सेठ जी ने देख लिया और दौड़कर चट से मूर्ख-राज का हाथ पकड़ लिया। मूर्खराज चौंक पड़े, भौंचक से रह गए।

सेठ जी ने बालक को छीनकर दोनों हाथों से छाती से लगा लिया। बालक रो रहा था। बालक का रोना सुनकर सेठानी भी सहन में दौड़ आईं। मूर्खराज का चरित्र सुन-कर उनकी छाती धक्-धक् करने लगी। कहने लगीं—आज बड़े-बूढ़ों की पुण्याई आड़े आ गई, नहीं तो लड़का मर ही जाता। अच्छा हुआ जो इन्होंने देख लिया। इतना कहते-कहते सेठानी की आँखों में आँसू आ गए। बालक को अपनी गोदी में लेकर प्यार किया और घर में ले गईं। घर आकर सेठ जी की ओर देखते हुए सेठानी बोलीं—मेरे घर में ऐसे मूर्ख नौकर की आवश्यकता नहीं है। इसे इसी समय

निकाल दो। अभागे ने आज तो मेरे बच्चे को बेमौत मार डाला होता।

सेठ जी भी मूर्खराज से बहुत चिढ़े हुए थे। मूर्खराज की खूब मरम्मत की और घर से निकाल दिया।

जयसिंह का मूसल

मूर्खराज सिर खुजाते-खुजाते बाहर निकले। सोचने लगे कि अब कहाँ जाऊँ ? घर जाने से भी कोई लाभ नहीं, घर में खाने को एक दाना भी नहीं। इसलिए घर तो न जाना चाहिए। पास ही के गाँव में हमारे कुल के जयसिंह भाट रहते हैं, उन्हीं के यहाँ चलना चाहिए। जब मूर्खराज की माता जीवित थी, तब जयसिंह बराबर उनके यहाँ जाया-आया करते थे। एक-एक सप्ताह उनके यहाँ रहते। बुढ़िया उनका बड़ा आदर-सत्कार करती। घर लौटते समय बहुत सी मिठाई बाँध देती। मूर्खराज यह सब कुछ जानते थे, इसीलिए वे उनके यहाँ आए। गाँव में आकर जयसिंह भाट का मकान पूछा। लोगों ने बता दिया।

दोपहर का समय था। जयसिंह भोजन आदि से निबट कर बाहर चबूतरे पर बैठे थे। इन दिनों जयसिंह की हालत बड़ी शोचनीय हो रही थी। दो-चार बर्तनों को छोड़कर और कुछ भी शेष नहीं था। रोज़ लाते और रोज़ खाते। अधिकतर तो अपने यजमानों के घर जाकर ही भूख मिटाते। घर के बाल-बच्चों को भी पेट भर के खाने का प्रबन्ध नहीं था। दुष्काल में दो अषाढ़ ! घर पूछते-पूछते मूर्खराज आ पहुँचे। जयसिंह ने दूर ही से देख लिया। वे घर में आए और स्त्री से कहा कि अपनी जिजमान अनन्तपुर वाली

बुद्धिमती का लड़का मेरा नाम पूछता हुआ आ रहा है। इसलिए उचित सत्कार करके उसे विदा कर देना। इतना समझाकर जयसिंह पीछे के रास्ते से निकल गए और एक पड़ोसी के यहाँ जा बैठे।

इतने में पूछते-पूछते मूर्खराज आ पहुँचे। आवाज़ देने लगे। आवाज़ सुनकर जयसिंह की स्त्री दरवाज़े पर आकर कहने लगी— आओ भैया, इस समय कहाँ से आ रहे हो?

मूर्खराज ने कहा—पास ही के गाँव से आ रहा हूँ। एक काम से आया था, सोचा कि भाट जी का गाँव पास ही है, चलो मिल आएँ।

जयसिंह की स्त्री ने कहा—बड़ा अच्छा किया भैया, आओ बैठो।

मूर्खराज इतना ही तो चाहते थे। आसन बिछ गया था, आप चट से जमकर बैठ गए।

जयसिंह की स्त्री बहुत ही समझदार और आदर-सत्कार करने वाली थी। वह तुरन्त एक लोटा लेकर बनिए की दूकान पर गई और लोटा रहन रखकर आटा, घी, शकर वगैरह लाई। भोजन तैयार किया और मूर्खराज से कहा— उठो भैया, भोजन तैयार है, चलो खा लो। मूर्खराज ने कपड़े उतारे, हाथ-पाँव धोए, कुल्ला किया और चौकी पर पलथी मार कर बैठ गए।

इस समय जयसिंह की स्त्री के मन में यह विचार

उत्पन्न हुआ कि मेरे प्राणों से प्यारे बच्चों को तो कभी रूखा-सूखा भी नहीं मिलता, और ये मुआ मुफ़्त में ही सब माल झाड़ जायगा। इसलिए ऐसा उपाय करना चाहिए कि ये मुआ बग़ैर खाए ही उठ जाय और यह हलुआ-पूरी मेरे बच्चे खायँ—मेरा कलेजा ठण्ढा हो। मूर्खराज को थोड़ी देर की बातचीत में ही समझ लिया था कि ये मूर्खराज हैं।

मूर्खराज ज्योंही चौकी पर बैठे थे कि जयसिंह की स्त्री दौड़कर एक मूसल उठा लाई और तुरन्त ही उसे एक कोठी में छुपा दिया। ऊपर से कपड़ा ढाक दिया। यह देखकर मूर्खराज ने पूछा—ये क्या बात है? मूसल क्यों छुपा दिया? इतनी घबड़ा क्यों गई?

स्त्री ने कहा—तुम पहले भोजन कर लो, तब सुना दूँगी।

मूर्खराज हठ पकड़ गए। कहने लगे—कह दोगी तभी मैं भोजन करूँगा, नहीं तो नहीं करूँगा।

मूर्खराज की ऐसी हठ देखकर जयसिंह की स्त्री ने कहा—कुछ दिनों से तुम्हारे भाट जी पागल हो गए हैं। घर में कोई आदमी आता है, तो वे मूसल लेकर तुरन्त मारने लग जाते हैं। इस प्रकार वे कई आदमियों को अधमरा कर चुके हैं। इसीलिए मैंने मूसल कोठी में छुपा दिया है कि कहीं वे आकर तुम्हारी भी वही गति न करें। इसलिए जल्दी भोजन कर लो।

यह सुनकर मूर्खराज तुरन्त चौकी से उठ खड़े हुए और कपड़े हाथ में लेकर भागे। धोती चढ़ाते थे तो कपड़े छूट जाते और कपड़े पकड़ते तो धोती छूट जाती। मूर्खराज हाँफते-हाँफते भागे चले जा रहे थे। जयसिंह एक पड़ोसी के मकान पर बैठे थे। मूर्खराज को इस प्रकार भागते देखा तो घर आए। स्त्री से पूछने लगे—उसने कुछ खाया-पिया या नहीं? इस प्रकार भागता हुआ क्यों जा रहा है?

स्त्री ने उत्तर दिया—वहाँ उस अगले कोठे में एक मूसल रक्खा हुआ था, उसे देखकर वह कहने लगा कि यह मूसल तो बड़ा अच्छा है, बड़ा सुन्दर है। मुझे दे दो।

मैंने सोचा कि अगर ये मूसल इसे दे दूँगी, तो अनाज काहे से खाँडूँगी। इसलिए मैंने इन्कार कर दिया। मूसल को कोठी में छुपा दिया। इससे वह बड़ा क्रोधित हुआ और परसे हुए भोजन को छोड़कर भाग गया। मैंने बहुत समझाया-बुझाया, परन्तु एक न सुनी। कपड़े उठाकर एकदम भाग निकला। मैं क्या करूँ? मेरा क्या दोष?

किसी समय में बुद्धिमती ने जयसिंह का बहुत आदर-स्वागत किया था। जयसिंह उसे भुला नहीं सकता था। उसने मन में सोचा—वह कब-कब हमारे यहाँ आएगा। आज ही आया और भूखा चला गया। यह अच्छा नहीं हुआ। उसको बुलाकर लाना चाहिए। उसने अपनी स्त्री को बुरा-भला कहकर कहा—यदि उसने मूसल माँगा था, तो

तुम्हें दे देना चाहिए था। तुमने नहीं दिया, यह अच्छा नहीं किया। लाओ वह मूसल कहाँ है, मुझे दो। मैं उसे देकर मना लाऊँ।

स्त्री ने तुरन्त मूसल निकाल दिया और कहा—लो, यह अच्छा तुम्हारा जिजमान आया। मुझे क्या है, जाओ दे आओ और उसे मना लाओ। तुम्हें ही नया लाना पड़ेगा।

जयसिंह ने मूसल अपने हाथ में लिया और जल्दी-जल्दी मूर्खराज के पीछे दौड़ने लगा। बार-बार मूसल ऊँचा करके पुकारने लगा—ओ भाई किशनसिंह, ज़रा ठहरो।

मूर्खराज ने पुकारने की आवाज़ सुनी तो पीछे फिरकर देखा कि जयसिंह हाथ में मूसल लेकर मेरे पीछे दौड़ा आ रहा है। यह देखकर मूर्खराज ने मन में सोचा कि मैंने तो उसके यहाँ खाया भी नहीं, फिर यह क्यों मूसल हाथ में लेकर मारने को दौड़ा आ रहा है। मूर्खराज दम छोड़कर भागे। जयसिंह भी उसके पीछे ज़ोर से दौड़ने लगा। दौड़ते हुए पुकारने और मूसल दिखलाने लगे। परन्तु मूर्खराज ने एक भी आवाज़ न सुनी। जवान तो था ही, आख़िर इतनी दूर निकल गया कि जयसिंह उसे न पा सका और लौट आया। मूसल स्त्री को दे दिया और बोला—वह हाथ नहीं आया। मैं दौड़ते-दौड़ते थक गया, इसलिए लौट आया। ख़ैर, जो होना था, हो गया। बच्चों को खिला-पिला दो, इन बेचारों ने भला हलुवा-पूरी किस दिन देखा था।

स्त्री ने तो पहले ही से ये षड्यन्त्र रच रक्खा था। वह बड़ी ख़ुश हुई। अपने बच्चों को बड़े प्रेम से खिलाया-पिलाया। वह अपने मन में बड़ी प्रसन्न थी, किन्तु जयसिंह को मूर्खराज के लौट जाने का दुख था!

अनार के लिए पिटे

इधर मूर्खराज दौड़ते-दौड़ते छः-सात कोस निकल आए। बिना भोजन किए भागे थे, इसलिए भूख कड़कड़ा कर लग रही थी। मूर्खराज ने सोचा कि अब खाने का क्या प्रबन्ध हो। विचार करते-करते वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। बैठ कर जो दृष्टि सामने उठाई, तो निकट ही एक गाँव दिखलाई पड़ा। आप उधर ही चल दिए। पास ही एक बग़ीचा था। सोचा—चलो इसमें कुछ फल हों, तो तोड़कर खायँ। यह विचार कर मूर्खराज ने बग़ीचे में प्रवेश किया। देखा, एक अनार के पेड़ पर बहुत से पके-पके अनार लगे हैं। आपने पत्थर फेंक-फेंककर अनार गिराना शुरू किया। अनार तो एक भी न गिरा, परन्तु पत्थर फेंकने की आवाज़ सुनकर माली दौड़ आया। दूर ही से उसने डाँटकर कहा—अबे, तू कौन है, खड़ा तो रह ज़रा।

यह सुनकर मूर्खराज बोले—आ जा यार, मैं तो खड़ा ही हूँ, तू भी मेरे पास आ जा। मैं पत्थर फेंकता हूँ, तू मेरे हाथ में पत्थर देता जा।

यह सुनकर माली ने दो-तीन तमाचे लगाए। मूर्खराज ज़मीन पर गिर पड़े। पड़े-पड़े रोते हुए क्रोध के साथ बोले—मुझे क्यों मारता है? मैंने तेरे बाप का क्या खाया है? केवल दो-एक अनार मैंने तोड़े थे, उससे तेरा कोई बड़ा

नुक़सान हुआ हो, तो ले, लगा मेरी पीठ में। व्यर्थ अपने बाप को तङ्ग न कर, इसमें तेरे हाथ क्या लगेगा?

यह सुनकर माली ने समझा कि ये निरा बेवक़ूफ़ है, इसको पीटकर क्या लेंगे। यह सोचकर उसने उन्हें बग़ीचे में से निकाल दिया।

सबसे अच्छी चोरी

मूर्खराज बाहर आकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए और सोचने लगे कि व्यर्थ मार खाई और अनार भी खाने को न मिला। इससे तो जयसिंह भाट के यहाँ मूसल की मार खाई होती, तो खाने को तो मिलता। यहाँ तो मार की मार खाई और खाने को भी नहीं मिला। अब क्या करना चाहिए? अगर चोरी करने लगें तो बड़ा मज़ा आएगा। परन्तु कोई चोर मिल जाय, तो पहले उससे चोरी करना सीखना चाहिए। यह विचार करते-करते मूर्खराज को याद आ गया कि जब मैं ससुराल जा रहा था, तो उस नाले में मुझे चोर मिले थे। यदि आज भी वहीं चलकर बैठा जाय, तो कदाचित् चोर मिल सकते हैं। यह विचार कर उसी ओर चल दिया और वहाँ पहुँचकर उसी तरह बीच रास्ते में सो रहे। आधी रात का समय हुआ होगा कि कई चोर उधर से आए। उन्होंने ने मूर्खराज को रास्ते में सोया देखकर धमकाते हुए कहा—अबे, तू कौन है? रास्ता रोककर क्यों सोया हुआ है?

मूर्खराज ने उत्तर दिया—तुम बड़े अन्धे हो, दीखता नहीं कि मैं आदमी हूँ, मैं चोरों की प्रतीक्षा में यहाँ लेटा हूँ। मुझे उनसे चोरी करना सीखना है।

चोरों ने कहा—तू चोरी कर सकेगा?

मूर्खराज बोले—बहुत अच्छी तरह। आज मैं एक बग़ीचे में गया था, वहाँ से अच्छी तरह पिटकर आया, ज़रा भी न रोया और भूखा ही सो रहा हूँ।

चोरों ने समझा, वास्तव में यह हम-जैसा ही साहूकार नज़र आता है, अन्यथा यहाँ इस प्रकार अकेला न सोता। चोरों ने उसे अपने साथ ले लिया। मूर्खराज बड़े प्रसन्न हुए और उनके साथ चोरी करने चले।

हलुवा बनाने लगे

थोड़ी दूर गए होंगे कि एक गाँव आया। सबने गाँव में प्रवेश किया और सेंध लगाकर एक बुढ़िया के मकान में घुस गए। सब चोर अपना-अपना काम करने लगे; रुपया-पैसा और माल-मता बाँधने लगे, परन्तु मूर्खराज तो सुबह से भूखे थे। विचारने लगे कि कोई खाने की चीज़ हाथ लग जाय, तो ख़ूब उड़ाई जाय। इसके पश्चात् वे चारों ओर खोजने लगे, बड़ी देर में एक भँडरिया उन्हें दिखलाई पड़ी। मूर्खराज ने उसे खोल कर देखा, तो पूरियाँ ढकी रक्खी थीं। मन में बड़े प्रसन्न हुए। मुँह में पानी भर आया। कोई शाक-वाक तो था नहीं, सोचने लगे, रूखी पूरियाँ किस तरह खाई जायँगी, इसलिए कुछ गुड़-शक्कर मिल जाय, तो बड़ा अच्छा हो। वह भँडरिया को खोजने लगे। उसमें घी, शक्कर, मैदा और सूजी सब कुछ रक्खा हुआ था। सब कुछ देखकर मूर्खराज का जी ललचाया कि सब सामान तो है ही, हलुवा बनाया जाय, बड़ा मज़ा आएगा। दियासलाई उनके पास ही थी। लकड़ियाँ रख के तुरन्त उन्होंने चूल्हा जला दिया। उधर वे चोर अपना काम कर रहे थे, इधर मूर्खराज हलुआ बनाने में लगे थे।

हलुआ तैयारी पर था, कुछ ही कसर थी। घर की मालिकिन बुढ़िया पास ही के बरएडे में सोई थी। उसने

ज़रा अलसाते हुए करवट बदली, परन्तु थी वह भर नींद में। सोए-सोए सपने में वह कह रही थी—ला, मुझे भी घोड़ा दे।"

मूर्खराज ने यह सुना, तो समझे कि हलुआ माँग रही है। कहने लगे—"ठहर जा, अभी तैयार नहीं हुआ है।" थोड़ी देर में बुढ़िया फिर वही कहने लगी। यह देख कर मूर्खराज को बड़ा क्रोध आया। वे कहने लगे—"बनाते-बनाते चुड़ैल को भूख लग आई।" इतना कहकर मूर्खराज ने क्रोध ही क्रोध में एक कलछी भरके आग की तरह गरम-गरम हलुआ बुढ़िया के हाथ पर रख दिया। कहने लगे—"ले चुड़ैल, जला अपना मुँह।" हलुआ हाथ पर पड़ते ही बुढ़िया का हाथ जल गया। वह हाय-तोबा मचाने लगी। चिल्ला-चिल्लाकर पड़ोसियों को पुकारने लगी कि—"दौड़ो, दौड़ो, मेरे घर में चोर घुस आया।" यह सुनकर पास-पड़ोस के लोग दौड़ आए। घर में आकर चोरों को खोजने लगे। मूर्खराज हल्ला सुनते ही ऊपर मचान पर चढ़ गए।

—

ऊपर वाला जाने

बुढ़िया चिल्ला रही थी, हाय-हाय कर रही थी। पतला-पतला हलुआ उसके हाथ से लगा था। हाथ में फफोले पड़ गए थे। लोगों ने यह हालत देखकर पूछा—यह हाथ पर तुम्हारे क्या है, पाख़ाने की तरह ?

बुढ़िया ने रोते-रोते कहा—मैं क्या जानूँ भैया, वह ऊपर वाला जाने।

यह सुनते ही मूर्खराज चिढ़कर बोले—लुच्ची, झूठी, बदमाश कहीं की। ऊपर वाला क्या तेरा बाप लगता है, जो उसका नाम लेती है ? उन सब अपने रिश्तेदारों को देख न, जो गठरियाँ बाँध रहे हैं। उनसे तो कुछ नहीं कहती, मेरा ही नाम ले रही है। डाकिनी कहीं की।

यह सुनकर वे चोर तो भाग गए, पर मूर्खराज पकड़े गए। सब लोगों ने खूब मरम्मत की। मूर्खराज रोते-रोते बोले—मेरा क्या अपराध है ? मुझे क्यों मारते हो ? मैं हलुआ बना रहा था, बार-बार बुढ़िया ने माँगा, मैंने उसके हाथ पर रख दिया। जब बुढ़िया माँग रही थी, और वह घर की मालिकिन थी, तो मुझे देना ही चाहिए था। मेरा क्या दोष है ?

इस प्रकार मूर्खराज की अगट-शगट बातें सुनकर लोगों ने ख्याल किया कि यह कोई मूर्ख आदमी है। सिर्फ़ खाने के

लोभ से घर में घुस आया है। व्यर्थ इसे नहीं पीटना चाहिए। इस प्रकार विचार करके लोगों ने उसे छोड़ दिया।

मूर्खराज ने बाहर आकर देखा, तो चोरों का कहीं पता न था। उन्हें खोजते हुए वे आगे बढ़े। मन ही मन कहते जा रहे थे—"साले कैसे डरपोक थे, भाग गए। यदि कहीं मिल गए, तो खूब ही फटकारूँगा।" जब मूर्खराज का यह विचार भङ्ग हुआ, और नज़र उठाकर सामने देखा, तो सब चोरों को एक वृक्ष के नीचे बैठा पाया। वे भी मूर्खराज की प्रतीक्षा कर रहे थे। मूर्खराज जब उनके पास पहुँच गए, तो चोर बोले—मर बेवक़ूफ़, ख़ुद पकड़ा गया और हम लोगों को भी पकड़वाना चाहता था।

मूर्खराज ने कहा—जाओ नालायक़ो, तुम लोग मर्द नहीं हो, हिजड़े हो। ज़रा सी बात में ही भाग खड़े हुए? देखो मेरी बहादुरी, कैसा साफ़ बच आया। यदि तुम भी न भागते, तो मज़े से सब धन ले आते। मैं ऐसा उपाय करता कि तुम्हें ज़रा भी आँच न आती। परन्तु जब तुम भाग ही आए, तब मैं क्या करूँ।

अक़्लमन्द नवाब

चोरों ने कहा कि हमने तो माल-मते की गठरियाँ बाँध रक्खी थीं, हमें कौन छोड़ता ? तुझे तो मूर्ख समझ कर छोड़ दिया। यह सुनकर मूर्खराज बोले—अबे नालायक़ो, मूर्ख तुम हो, जो बँधी-बँधाई गठरियाँ छोड़कर भाग आए। मेरी बहिन तो रोज़ बनिए की दूकान से अनाज की गठरियाँ बाँधकर लाती थी। उसे तो आज तक किसी ने नहीं पकड़ा।

चोरों ने कहा—अबे पागल, वह ख़रीदकर लाती होगी। चोरी करके कोई दिन-दहाड़े ला सकता है ?

मूर्खराज बोले—अरे दिन को ही नहीं, रात को भी वह घी, तैल आदि लाया करती थी।

चोरों ने कहा—ठीक है, पर बिना पैसे नहीं लाती होगी।

मूर्खराज बोले—नहीं, बिना पैसे ही लाती थी। महीने में केवल एक बार पैसे दिया करती थी।

चोरों ने हँसकर कहा—अबे मूर्ख, तुझमें ज़रा भी अक़्ल नहीं है। चोरी करना क्या है, यह भी तुझे मालूम नहीं है। व्यर्थ क्यों बकवाद करता है ? यह बात बड़ी गहरी है।

मूर्खराज ने मुँह बनाते हुए कहा—ओफ़ ओ, मैं समझ गया। मेरे घर में एक कोठी थी, वह बड़ी गहरी थी। मैं उसमें समा जाता था। ऐसी ही गहरी बात होगी।

यह बात सुन चोर खीझ गए और कहने लगे—जा

बेवक़ूफ़, तुझमें ज़रा भी समझ नहीं है। चला जा, हमें तेरी आवश्यकता नहीं है। तू तो किसी दिन हमारी जान लिवा डालेगा।

मूर्खराज हाथ-पाँव जोड़ने लगे। कहने लगे—भाइयो, मुझे अलग न करो, नहीं मैं भूखों मर जाऊँगा। मुझ पर दया करके, अपने साथ ही रक्खो। अब जो तुम कहा करोगे, वही मैं किया करूँगा।

मूर्खराज की ये बातें सुनकर चोरों को दया आगई। एक ने कहा—अच्छा, इसे साथ रहने दो। कुछ न करेगा तो बोझा ही ढोया करेगा, टहल-सेवा करेगा।

यह सुनकर मूर्खराज प्रसन्नता से उछलते हुए बोले—हाँ यार, टहल-सेवा करना तो मुझे बड़ी अच्छी तरह मालूम है। बोझ ढोने का भी मुझे अच्छा अभ्यास है। एक रोज़ मैंने शहद का घड़ा उठाया था, इसी तरह तुम्हारी रुपयों की थैली वग़ैरा उठाया करूँगा।

कान लगा के सुनना

इस प्रकार मूर्खराज की आरज़ू-मिन्नत सुनकर चोरों को दया आगई। उन्होंने कहा—अच्छा, खैर, चल हमारे साथ। लेकिन याद रख, जो हम कहेंगे, वही करना होगा।

मूर्खराज ने इस बात को स्वीकार किया। शाम के वक्त सब लोग चोरी करने के लिए एक गाँव की ओर चले। गाँव में पहुँच कर एक गड़रिए के यहाँ चोरी करना निश्चित हुआ। आधी रात को चोरों ने मूर्खराज से कहा—ज़रा कान लगाकर सुन कि गड़रिया सो गया या जाग रहा है ?

मूर्खराज ने कहा—कान लगाकर सुनूँ ?

चोर बोले—हाँ, कान लगाकर सुन आ।

यह सुनकर मूर्खराज गड़रिए के मकान के पास गए और अपना एक कान काटकर दीवार से लगा दिया। फिर आकर कहने लगे—मैं कान लगा आया।

चोरों ने पूछा—गड़रिया जाग रहा है या सो गया ?

मूर्खराज बोले—यह तो मुझे मालूम नहीं।

चोरों ने कहा—जा, फिर कान लगा के आ।

मूर्खराज फिर पहुँचे। दूसरा कान भी काटकर दीवार से लगा दिया और आकर बोले—मैं फिर कान लगा आया।

चोरों ने पूछा—गड़रिया जाग रहा है या सो गया ?

मूर्खराज बोले—वह तो जाग रहा है।

जैसा कहोगे, करूँगा

थोड़ी देर के पश्चात् चोरों ने फिर तीसरी बार मूर्खराज से कहा—जा, फिर से तो कान लगाकर सुन। मूर्खराज अब की बार खीझ पड़े। बोले—अब मैं किस तरह कान लगाकर सुनूँ ? मेरे पास दो कान थे, उन्हें लगा आया। मेरे पास तीसरा कान कहाँ है, जो लगाकर सुनूँ ?

यह सुनकर चोर बोले—अबे दो और तीन कान कैसे ? हमने जो कुछ कहा था, तूने वह समझा या नहीं ?

मूर्खराज ने ज़रा चिढ़कर कहा—समझा कैसे नहीं ? देखते नहीं, मैं अपने दोनों कान लगा आया हूँ।

चोरों ने देखा तो सचमुच मूर्खराज के दोनों कान नदारद। यह देखकर वे बहुत हँसे और मूर्खराज की बुद्धिमानी की प्रशंसा करने लगे। आख़िर उन्होंने अपने साथियों में से एक को कान लगा आने के लिए भेजा। वह कान लगाकर तुरन्त लौट आया और बोला—अब विलम्ब न करो, क्योंकि गड़रिया इस समय भर नींद में है। पहली नींद है, इसलिए तुरन्त नहीं जागेगा। जल्दी करना चाहिए।

यह सुनकर सब चोर उठ खड़े हुए। मूर्खराज भी उठे, उससे चोरों ने कहा—तुझमें अक़्ल का तो नाम भी नहीं है। जो हम कहें वही तुझे करना चाहिए। नहीं तो उस बुढ़िया की तरह ये गड़रिया भी जाग पड़ेगा।

मूर्खराज बोले—नहीं जी, मैं कोई ऐसा पागल थोड़े ही हूँ। जो तुम कहोगे, मैं वही करूँगा। मेरी ओर से बिलकुल निश्चिन्त रहो।

चोरों ने गड़रिए के मकान में प्रवेश किया। मूर्खराज बाहर ही रहे। चोरों ने अन्दर जाते समय मूर्खराज को समझा दिया था कि बिलकुल चुपचाप रहना, एक शब्द भी मुख से न निकालना। मूर्खराज ने कहा—अजी, बेफ़िकर रहो, मैं ज़रा भी न बोलूँगा।

भेड़ों की चोरी

चोरों ने मकान में पहुँच कर देखा, तो कोई ख़ास माल-मता नज़र न आया। वे बाड़े में पहुँचे। बहुत सी भेड़ें बन्द थीं। सोचा, भेड़ों की ही चोरी की जाय। यह सोच कर उन्होंने एक मोटी सी भेड़ को उठाकर बाड़े के बाहर पटक दिया। मूर्खराज तो बाहर खड़े ही थे, जैसे ही उन्होंने भेड़ को बाहर पटका, वैसे ही मूर्खराज ने उसे उठाकर भीतर पटक दिया। चोरों ने समझा कि इसे भेड़ों की अच्छी जानकारी मालूम होती है। कदाचित् उसने इसे पसन्द नहीं किया। यह समझकर उन्होंने दूसरी भेड़ पटकी। मूर्खराज ने फिर उसे भीतर पटक दिया। चोरों ने चार-पाँच मर्तबा भेड़ें पटकीं, मूर्खराज भी अपनी क्रिया से बाज़ न आए। इस प्रकार पटकने से भेड़ें चिल्ला उठीं। गड़रिया तुरन्त जाग पड़ा और खाँसता-खखारता बाड़े में आया। वे चोर तो दीवार कूदकर बाहर भाग गए, किन्तु मूर्खराज बाड़े की दीवार लाँघ कर भीतर कूद पड़े। क्योंकि मूर्खराज ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जैसा वे लोग करेंगे, वैसा ही यह भी करेंगे। मूर्खराज के अन्दर कूदते ही गड़रिए ने उसे पकड़ लिया। चोर लोग भागकर बहुत दूर निकल गए।

प्रातःकाल हुआ। वे लोग हाथ-मुँह धोकर एक वृक्ष के नीचे बैठे। खाने-पीने का सामान साथ ही बँधा था, खाया-पिया।

इसके बाद सबने विचार किया कि इस मूर्ख ने दो बार हमारा किया-कराया नष्ट कर दिया। अब इसे साथ नहीं रखना चाहिए। उस बुढ़िया के यहाँ भी इसने मूर्खता की और रात को गड़रिए के यहाँ भी अपने गधेपन का परिचय दिया। इसे अब साथ रखना ही नहीं चाहिए। इसकी मूर्खता तो देखो, अपने दोनों कान भी काट लिए। सब रात भर के जागे हुए थे, बातचीत करते-करते उसी वृक्ष के नीचे सो गए।

मक्खन-रोटी

उधर मूर्खराज को पकड़ कर गड़रिए ने खूब ही पीटा।

पिटते-पिटते मूर्खराज बोले—भाई, तुझे पीटना हो तो पीट ले, पर मेरे गालों पर थप्पड़ न मार; क्योंकि मैंने अपने दोनों कान काटकर दीवार से लगा दिए हैं, बड़ा दर्द होता है। पीठ पर मार ले।

गड़रिए ने उसके कानों की तरफ़ देखा, तो सचमुच उसके कान कटे हुए थे। कपड़े खून से तर हो रहे थे। गड़रिए ने समझ लिया, वास्तव में ये मूर्ख है। उसने छोड़ दिया। जाते-जाते मूर्खराज ने गड़रिए से कहा—भाई, मैं बड़ा भूखा हूँ, मुझे कुछ खिलाओ। गड़रिए को दया आ गई। उसने रोटियाँ और मक्खन मूर्खराज को खाने को दिया। रोटी और मक्खन लेकर मूर्खराज चल दिए।

प्रातःकाल हो गया था। भाग्य से मूर्खराज उसी ओर चल पड़े, जिस ओर चोर गए थे। ज़रा बढ़ते ही मूर्खराज उस वृक्ष के निकट जा पहुँचे, जहाँ चोर सो रहे थे। मूर्खराज ने पुकारा—अरे मूर्खो, अभी तक क्या सो रहे हो, सबेरा होगया है। उठो, मैं रोटी और मक्खन लाया हूँ, ज़रा इसे खा लो।

चोर जाग पड़े और उसे देखकर आश्चर्य करने लगे कि यह किस तरह छूट आया और मक्खन-रोटी कहाँ से

ले आया। मूर्खराज ने सब घटना कह सुनाई। सुनकर वे एक-दूसरे की ओर देखकर हँसने लगे। इसके पश्चात् सबने मिलकर मक्खन और रोटी का भोग लगाया।

मूर्खराज और बैल

मूर्खराज का रोटी-मक्खन खाकर चोर ज़रा लजा गए। उन्होंने जो उसे साथ न रखने का विचार किया था, उसे भूल गए। शाम आई। अन्धकार हो गया। सब लोग चोरी के लिए गाँव की ओर चले। गाँव में जाकर पटेल के यहाँ से दो सौ रुपए का एक बैल चुराया। बैल को लेकर रातोंरात उन्होंने बहुत दूर की यात्रा तय की—इसलिए कि पास ही कोई पहचान न ले। प्रातःकाल होते-होते जब उन्होंने दस-बारह गाँव का सफ़र कर लिया, तो विश्राम लिया। पाख़ाना गए, हाथ-मुँह धोया। एक बड़ के वृक्ष के नीचे बैठकर विचार करने लगे—हम लोग कई दिनों से रूखा-सूखा खाते आ रहे हैं, आज तो खिचड़ी बनाई जाय और खूब घी छोड़कर खाई जाय। बहुत दूर निकल आए हैं, अब कोई डर नहीं। दो जने तो चावल-दाल लेने जायँ, एक लकड़ी बीन लाए, एक पानी भर लाए, और बैल मूर्खराज के सुपुर्द कर दिया जाय, वह सँभालेगा।

मूर्खराज को बैल सौंपकर वे लोग अपने-अपने काम पर जाने लगे। जाते-जाते उन्होंने मूर्खराज को समझाया—देख, अपनी बात किसी से न कहना।

मूर्खराज बोले—अजी, मैं किसी से बोलूँगा ही नहीं।

इस प्रकार समझा-बुझा कर चोर चले गए। चोरों के

जाते ही गाँव का पटेल वहाँ आ पहुँचा। उसने मूर्खराज से पूछा—क्यों भाई, यह बैल बेचने का है क्या?

मूर्खराज ने कोई जवाब न दिया। यह देखकर पटेल को बड़ा सन्देह हुआ। सोचने लगा—'हो न हो, यह बैल ज़रूर चोरी का है। तभी तो यह कोई जवाब नहीं देता। पटेल ने सिपाही को बुलाया और मूर्खराज को बैल-सहित लिवाकर थाने की चौकी पर ला बिठाया। इतने में वह दो चोर, जो दाल और चावल लेने बाज़ार गए थे, उधर से आ निकले। मूर्खराज को थाने की चौकी पर बैठा देखा तो वे घबड़ा गए। सोचा, कहीं इस मूर्ख ने भण्डाफोड़ तो नहीं कर दिया। परन्तु वे चोर बड़े साहसी और समझदार थे, मूर्खराज की बेवक़ूफ़ियों पर उन्हें विश्वास था कि अगर उसने कोई बात की होगी, तो उस पर कोई विश्वास न करेगा। यह सोचकर वे चौकी के पास आए और कहने लगे कि हमारे आदमी को यहाँ क्यों बिठला रक्खा है?

पटेल ने कहा—हमें सन्देह था कि यह बैल कहीं से चुरा कर लाया है, इसलिए हमने इससे पूछा कि तू बैल कहाँ से लाया है, किन्तु इसने कोई उत्तर नहीं दिया। हमने निश्चय कर लिया कि अवश्य यह चुरा कर लाया है।

पटेल की बात सुनकर चोर बोले—अजी साहब, आपने भी ख़ूब समझा। आपने यह भी नहीं देखा कि इसके कान नदारद हैं। इसे सुनाई ही कहाँ पड़ता है।

पटेल को चोरों की बात उचित मालूम हुई। मूर्खराज छोड़ दिए गए। दोनों चोर मूर्खराज और बैल को साथ लेकर अपने स्थान पर आए। जो चोर लकड़ी और जल लेने गए थे वे भी आ पहुँचे थे। उन्होंने क़िस्सा सुना तो कहा—भाई, अब यहाँ ठहरना उचित नहीं है। चलो, आगे चल कर ही खिचड़ी बनाएँगे। कहीं पटेल फिर आ गया और मूर्खराज से बातें कीं, तो भण्डाफोड़ हो जायगा। हम पकड़े जायँगे। इसलिए चलो, यहाँ न ठहरना चाहिए।

सबको यह बात उचित मालूम हुई और वे वहाँ से चल दिए। दो-तीन गाँव आगे पहुँचकर एक नदी के किनारे उन्होंने मुक़ाम किया, आनन्द से खिचड़ी बना के खाई और सारी रात वहीं बिताई।

यह विचार कर उन्होंने मूर्खराज को पाँच रुपए देकर कहा—जाओ, इसकी मिठाई ले आओ।

मूर्खराज बाज़ार की ओर गए और चोरों ने एक ओर का रास्ता लिया। थोड़ी देर में मूर्खराज मिठाई लेकर आए और वृक्ष के नीचे देखा, तो किसी का पता नहीं है। वे अपने मन में बड़े दुखी हुए और विचार करने लगे—ये लोग मुझे छोड़कर कहाँ चले गए, मैं अकेला रह गया। अब मुझे क्या करना चाहिए। थोड़ी देर इस प्रकार सोच-विचार करते रहे, आख़िर उन्होंने निश्चय किया कि कोई चिन्ता नहीं, मैं भी चोरी करूँगा, मुझे भी चोरी करना आ गया है। क्या वे ही चोरी करना जानते हैं? वे तो जहाँ-जहाँ चोरी करने गए, हमेशा डर कर भागे और मैं कई जगह पकड़ा गया, किन्तु आसानी से छूट आया। इसलिए मैं उनसे ज्यादा बहादुर हूँ। मैं अकेला ही चोरी करने जाऊँगा।

सोच-विचार कर मूर्खराज चल पड़े। पाँच-सात गाँव तय किए होंगे कि भूख लग आई। मिठाई तो पास ही बँधी थी, पेट भर कर खाई। इस समय धूप ज़रा तेज़ थी, इससे मूर्खराज ने विचार किया कि जरा वृक्ष के नीचे आराम कर लिया जाय। यह सोचकर वे वृक्ष की छाया में सो गए। तीसरे पहर धूप कम होते ही आप फिर चल पड़े।

मेहतर के यहाँ चोरी

चलते-चलते शाम हो गई। अँधेरा होते-होते मूर्खराज एक गाँव के पास पहुँचे। गाँव में प्रवेश नहीं किया। गाँव के किनारे एक बहुत बड़ा इमली का वृक्ष था। आप उसी पर चढ़कर बैठ गए। जब आधी रात से ज्यादा समय हो गया, तो आप उतरे और गाँव में घुसे। गाँव में घुसते ही किनारे पर एक झोपड़ा पड़ता था। मूर्खराज ने उसी में चोरी करने का निश्चय किया। यह झोपड़ा एक मेहतर का था। किवाड़ मज़बूत न थे। आपने आसानी से उतार लिए और भीतर घुस गए। चारों ओर खोजा, पर कोई चीज़ हाथ न लगी। मेहतर के घर में होता भी क्या ? दिए तक का पता न था।

घर का कोना खोजने पर भी जब कोई चीज़ का पता न लगा, तो मूर्खराज बहुत निराश हुए ; परन्तु खोजते-खोजते दीवार पर टँगा हुआ मेहतर के बजाने का एक बाजा अन्त में उनकी नज़र पड़ गया। उसे देखकर मूर्खराज बड़े ख़ुश हुए। मन में कहने लगे—भई वाह, बड़ी अच्छी चीज़ हाथ लगी। अब क्या चिन्ता है। अब तो किसी राजा के यहाँ नौकरी कर लूँगा। मज़े से दस-पन्द्रह रुपया तनख़्वाह मिलेगी। जीवन भर अच्छी तरह गुज़र होगा। परन्तु इसी समय उनको विचार हुआ कि कहीं यह बाजा ख़राब तो नहीं

है। चट आपने मुँह से लगाया और फूँकने लगे। घर में धू-धू करके आवाज़ गूँज उठी।

गरमी के दिन थे, इसलिए मेहतर गरमी के मारे बाहर चबूतरे पर सोया हुआ था। बाजे की आवाज़ सुनी तो जाग पड़ा। घर में पहुँचा और मूर्खराज को पकड़कर ख़ूब पीटा। दिया जलाकर उसका चेहरा देखने लगा कि कोई पागल-वागल तो नहीं है। मेहतर को ख़याल था कि पागल के सिवा कोई चोर घर में आकर इस प्रकार भला बाजा क्यों बजाएगा। जब मेहतर मूर्खराज को पहचान न सका, तो पूछा—अबे, तू कौन है? रात के वक़्त घर में घुस कर इस प्रकार ऊधम क्यों मचाए हुए है?

मूर्खराज बोले—मैं चोर हूँ। मुझे खाने को दे दो तो चोरी न करूँगा?

इस प्रकार बातें सुनकर मेहतर ने समझ लिया कि यह कोई पागल है। इसे मार-पीट कर क्या लिया जायगा। इसे छोड़ दिया जाय। यह सोचकर मेहतर ने उसे धक्के देकर घर से निकाल दिया और कहा—ख़बरदार, फिर कभी इधर आया तो ख़ूब पिटेगा। भाग जा।

मूर्खराज कुएँ में

जब मूर्खराज इस प्रकार मार-पीटकर निकाल दिए गए, तो मार्ग पर आकर सोचने लगे कि अब क्या किया जाय ? रात अँधेरी थी। हाथ को हाथ न सूझता था। थोड़ी देर तक तो वह गाँव के बाहर टहलते रहे, परन्तु सोचा कि इस प्रकार सारी रात कैसे बिताई जायगी। सोने की जुगत लगाई जाय। यह सोचकर मूर्खराज आगे बढ़े कि पास ही उन्हें एक बहुत बड़ा बड़ का वृक्ष दिखाई पड़ा। वृक्ष ख़ूब सायादार था। आप उसी के नीचे सो गए। परन्तु अन्धकार के कारण उन्हें यह दिखलाई नहीं पड़ा कि जहाँ वे सोए हैं वहाँ ज़मीन से मिला हुआ एक कच्चा कुआँ है। मूर्खराज को सोते ही नींद आ गई। और सोते-सोते जैसे ही उन्होंने करवट बदली कि धम्म से कुँए में गिर पड़े। परन्तु उनके भाग्य से कुएँ में बड़ की जड़ें और जटाएँ लटक रही थीं, गिरते ही आपने उन्हें थाम लिया और डूबने से बच गए। किसी प्रकार प्रातःकाल हुआ, परन्तु मूर्खराज ने एक भी आवाज़ किसी को न दी कि कोई मुझे निकाल ले।

एक मारवाड़ी व्यापारी माल ख़रीदने के लिए किसी गाँव को जा रहा था। प्यास लगी तो कुएँ पर पानी पीने को आया। उसने रुपयों की पोटली कन्धे से उतार कर किनारे रख दी और लोटा-डोर निकाल कर कुएँ से पानी खींचने

लगा। लोटा ज्योंही कुएँ में पहुँचा, त्योंही मूर्खराज ने पकड़ लिया। एक हाथ से जड़ पकड़े हुए थे, और दूसरे हाथ से लोटा पकड़कर खींचने लगे। यह देखकर वह मारवाड़ी बड़े विचार में पड़ गया कि मामला क्या है, इस लोटे को कौन खींच रहा है? उसने बहुत कोशिश की और लोटे को खींचना चाहा। परन्तु मूर्खराज ने बहुत ज़ोर से पकड़ रक्खा था, वह ज़रा भी न खिंचा।

कुएँ में भूत

इस प्रकार लोटे को खींचता देखकर मारवाड़ी सेठ बहुत डर गए। उन्होंने समझा कि कुएँ में ज़रूर कोई भूत है। "हाय बाप रे, अब मेरी क्या गति होगी ? मुझे तो वह कच्चा ही खा जायगा।" मारवाड़ी सेठ बहुत डर गए थे, मूर्च्छित हो गए। मूर्च्छित होकर जिस ओर गिरे थे, उस ओर की ज़मीन ज़रा ढालू थी। आप लुढ़के तो लोटे की मज़बूत डोरी आपके शरीर से ख़ूब लिपट गई। उधर मूर्खराज ने डोरी को खींचना शुरू किया। जब डोरी ज़रा भी न खिंची, तो मूर्खराज दोनों हाथों से डोरी पकड़कर ऊपर चढ़ आए। यहाँ एक मोटा सा मनुष्य बेहोश पड़ा हुआ उन्हें दिखलाई दिया। मूर्खराज ज़रा डर गए कि क्या गड़बड़ी है। कोई इसे मारकर तो यहाँ नहीं पटक गया। अगर ऐसा होगा, तो आफ़त आ जायगी। अतः यहाँ नहीं ठरहना चाहिए।

यह सोचकर मूर्खराज वहाँ से चलने लगे। परन्तु उनकी दृष्टि वृक्ष के नीचे गई, तो देखा कि एक गठरी रक्खी हुई है। मूर्खराज ने तुरन्त गठरी को खोला, उसमें बारह सौ रुपए नक़द थे और खाने-पीने का सामान भी। यह सब देख कर मूर्खराज बहुत ख़ुश हुए और गठरी बाँध कर तुरन्त वहाँ से चल दिए। कुछ देर के बाद मारवाड़ी को होश आया।

डरते-डरते अपने शरीर से डोरी छुड़ाया और जल्दी-जल्दी रुपयों की गठरी उठाने के लिए वृक्ष के नीचे गया। वहाँ गठरी का पता ही न था। मारवाड़ी ने सोचा कि कोई उठा ले गया होगा। वह निराश होकर अपने गाँव की ओर लौट चला। शाम होते-होते घर पहुँचा। रुपयों के रञ्ज में उसे खाना-पीना अच्छा नहीं लगा— भूखा ही सो गया। नींद भी नहीं आई।

प्रातःकाल हुआ। मारवाड़ी अपने गाँव के राजा के पास गया और सब कथा कह सुनाई। सुनकर राजा भी बड़ा आश्चर्य-चकित हुआ। और उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि जाकर देखो, कुएँ में भूत है या नहीं? और इसकी रुपयों की गठरी कहाँ गई। राजा की आज्ञानुसार दो सिपाही मारवाड़ी को साथ लेकर कुएँ पर गए। वहाँ जाकर देखा, तो लोटे-डोरी तक का पता नहीं था। उसे भी कोई लेकर चल दिया था। एक सिपाही ने अपना साफ़ा खोलकर कुएँ में छोड़ा, परन्तु किसी भूत का पता न लगा। रुपयों की गठरी को चारों ओर खोजना शुरू किया, उसका भी कहीं पता न लगा। अन्त में राजा के पास आकर उन्होंने सारा हाल सुनाया। ऐसी दशा में राजा क्या करता? सब अपने-अपने घर चले गए।

रुपयों की गठरी लेकर मूर्खराज सीधे अपने घर आए। घर का ताला खोला, झाड़ा-बुहारा, नहाए-धोए और बाज़ार

से सब सामान लाकर भोजन बनाया। उन्हें खाते-पीते शाम हो गई। रुपयों की गठरी को सँभाल कर रक्खा और लोगों से मिलने-जुलने निकल गए। रात हो गई थी। लौटकर आए और सो गए। प्रातःकाल हुआ तो शौचादि से निबट कर स्नान किया, भोजन बनाया-खाया। इसके बाद लेटे-लेटे सोचने लगे कि ईश्वर की कृपा से फिर अचानक धन मिल गया है, इसलिए अब कोई ऐसा रोज़गार करना चाहिए कि अच्छे धनवान् बन जायँ, और व्यर्थ ही गाँव-गाँव न भटकना पड़े।

मूर्खराज का अर्थशास्त्र

खूब सोच-विचार कर मूर्खराज ने निश्चय किया कि जिस प्रकार मेरे बहनोई महँगी-महँगी चीज़ों का रोज़गार करते हैं, उसी प्रकार कोई रोज़गार करना चाहिए, जिससे धन की प्राप्ति हो। परन्तु कौन सा रोज़गार करना चाहिए ? यदि परदेश से कोई चीज़ मँगाते हैं, तो जहाज़ चाहिए, गाड़ियाँ चाहिए, और फिर इतना रुपया भी तो नहीं है। इसलिए मुझे ऐसा माल भरना चाहिए, जो बरसात में प्राप्त न हो सके। यह निश्चय करके मूर्खराज विचार करने लगे। विचार करते-करते उन्हें ख़्याल आया कि आजकल आम का मौसम है, बरसात में ये बिलकुल नहीं मिलते और मिलते भी हैं, तो बड़े महँगे मिलते हैं। इसलिए अभी से ख़रीद कर रख लूँ, बड़े अच्छे दाम आएँगे।

धन तो ईश्वर ने दे दिया, परन्तु वे मूर्खराज थे, इसलिए उसका अच्छा उपयोग नहीं कर सके। उन्होंने अपने विचार के अनुसार केवल पचास रुपया बचाकर सब रुपयों के कच्चे आम ख़रीद लिए और कोठे भर दिए। निश्चय किया कि मौसम भर कोठों का ताला नहीं खोलेंगे। जब आधी बरसात बीत जायगी तो बेचेंगे। ख़ूब धन मिलेगा।

आमों का खाद

इस प्रकार कोठे भरकर मूर्खराज निश्चिन्त हो गए। पचास रुपए पास थे, उन्हीं से अपना गुज़र करने लगे। लगभग दो मास में आमों का मौसम खतम हो गया। मूर्खराज ने सोचा कि अब आमों को बेच डालना चाहिए। उन्होंने कोठे खोले। देखा, मारे गरमी के सब आम चिमल गए और सड़ गए हैं। उनमें से दुर्गन्ध निकल रही है। यह देखकर मूर्खराज बड़े दुखी हुए। समझ में नहीं आया कि क्या करना चाहिए। आमों का खाद बन चुका था, मूर्खराज को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैंने तो कोठे में आम भरे थे, यह खाद कैसे बन गया। ज़रूर इसमें कोई रहस्य है। पड़ोसियों ने तो कोई बेइमानी नहीं की ? यह सोचकर वे कोठों को बड़े ग़ौर से देखने लगे। देखा कि चूहों ने दीवार में बड़े-बड़े दर बना दिए हैं और आम खा-खाकर ढेर कर दिया है। गुठलियाँ पड़ोसियों के मकान में पहुँचा दी हैं। यह देखकर पड़ोसियों से कहने लगा—तुम बड़े चोर हो। तुमने सध लगाकर मेरे सब आम चुरा लिए। देखो, गुठलियाँ तुम्हारे मकान में पड़ी हैं। चोरी का यह सबसे बड़ा सुबूत है।

पड़ोसी मूर्खराज को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने कोई विशेष उत्तर न देकर कहा—अच्छा भाई, हम चोरी

करके खा गए, जो तुझसे हो सके, कर ले। यह सुनकर मूर्खराज दरवाज़े पर बैठ गए और गालियों की झड़ी लगाने लगे। पहले तो पड़ोसियों ने कोई परवा नहीं की, समझा कि मूर्ख है, बकने दो। किन्तु जब मूर्खराज बहुत ही अश्लील गालियाँ बकने लगे, तो उन्हें बड़ा क्रोध आया। एक पड़ोसी ने उन्हें समझाया, फिर भी वे न माने, तो लात-घूँसा और तमाचों से उनकी ख़ूब मरम्मत की। वे ज़मीन पर लोटने और रोने लगे। इतने में ही एक सरकारी सिपाही उधर से निकला। उसने पूछा—अरे, क्यों रो रहा है?

मूर्खराज रोते-रोते बोले—ये साले मेरा सब माल खा गए और ऊपर से मारते हैं। इसी से मैं रो रहा हूँ।

सिपाही ने पूछा—किसने तुम्हें मारा है, मुझे बताओ। मैं उसे पकड़ कर ले चलूँगा।

मूर्खराज उठे और पड़ोसी को दिखला दिया। सिपाही मूर्खराज के साथ पड़ोसी को राज-दरबार में ले गए।

उस पड़ोसी का नाम फ़तहसिंह था। सिपाही ने उसे राजा के सामने खड़ा कर दिया और सब कथा कह सुनाई। सुनकर राजा ने मूर्खराज से पूछा—तुम्हारी क्या फ़रियाद है?

मूर्खराज ने कहा—मैंने बेचने के लिए आमों के कोठे भरे थे। इन लोगों ने सेंध लगाकर सब आम चुरा लिए, और कोठों में खाद भर दिया।

मूर्खराज की यह बात सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा—तुम्हारी बात मानने के योग्य नहीं है, क्योंकि आम का मौसम समाप्त हुए दो मास बीत गए। आजकल आम कैसे? तुम झूठ बोलते हो।

मूर्खराज ने कहा—सरकार, झूठ नहीं है, आप जाँच करा लीजिए।

यह सुनकर राजा ने अपने सिपाहियों को जाँच करने के लिए भेजा। सिपाहियों ने जाकर देखा कि आम सड़ गए हैं, उनमें कीड़े पड़ गए हैं, दुर्गन्ध आ रही है। सिपाहियों ने लौटकर सब हक़ीक़त राजा को सुनाई। राजा चक्कर में पड़ गए—"यह कैसा मामला है। यह कैसा व्यापारी है कि इसने आम के कोठे भर दिए और अभी तक बन्द कर रक्खा।" ज़रा विचार करते ही उन्हें याद हो आया कि ओ-हो! यह तो वह आदमी है जिसने सौ प्याज़ खाए, सौ जूते खाए थे, और अन्त में सौ रुपए भी जमा किए थे। इस प्रकार जब राजा ने समझ लिया कि यह तो वही मूर्ख है, तो उसे दरबार से निकलवा दिया। मूर्खराज अपना-सा मुँह लेकर घर आए।

राजा के इन्साफ़ का इन्साफ़

मूर्खराज ने घर आकर विचार किया, यह साला राजा भी बड़ा बेवक़ूफ़ है। पड़ोसियों ने मेरे सब आम चुरा लिए, परन्तु उसने उन्हें कोई दण्ड नहीं दिया—उलटे मुझे दरबार से निकलवा दिया। इसलिए प्रकट हो गया कि चोरी करने वाले चोर को राजा दण्ड नहीं देता। अब अपने पास भी पैसा तो रहा नहीं है, इसलिए आज ही रात को किसी गाँव में चोरी करनी चाहिए। कुछ माल हाथ लग गया, तो ठीक है, और अगर पकड़े भी गए, तो कुछ चिन्ता नहीं है; क्योंकि राजा चोरों को दण्ड तो देता ही नहीं।

इस प्रकार निश्चय करके मूर्खराज आधी रात के समय घर से निकले। चोरी करने के लिए चौरास्ते पर आ खड़े हुए। पहरेदार पहरा दे रहे थे। उन्होंने मूर्खराज को देखा तो पूछा—अबे तू कौन है? इतनी रात को कहाँ जाता है?

मूर्खराज बोले—दीखता नहीं कौन हूँ? मनुष्य हूँ। चोरी करने निकला हूँ।

यह सुनकर सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और थाने में ले जाकर रात भर बिठा रक्खा। प्रातःकाल होते ही उसे राजा के पास ले गए और सब क़िस्सा कह सुनाया। राजा ने उसे देखते ही कहा—अरे, यह तो मूर्ख है, इसे क्यों पकड़ लाए?

सिपाही बोले—सरकार, यह कहता था कि चोरी करने निकला हूँ, इसलिए पकड़ लाए।

राजा ने कहा—इसके पास के सब रुपए नष्ट हो गए, इससे भूखों मरता होगा, चोरी करने का इरादा किया होगा, परन्तु मूर्ख है इसलिए कह दिया कि चोरी करने निकला हूँ, नहीं तो कहीं चोर चोरी स्वीकार करता है ? इसे छोड़ दो। सिपाहियों ने छोड़ दिया।

राजा की नौकरी

मूर्खराज को छोड़ तो दिया, परन्तु उसकी दशा देखकर राजा को दया आ गई। राजा ने सोचा कि है तो यह मूर्ख, परन्तु कोई मामूली काम इसे सौंप दिया जाय, तो यह करता रहेगा। राजा ने मन्त्री को आदेश दिया कि किसी साधारण काम पर इसे नौकर रख लिया जाय। इसका बाप भी पहले अपने यहाँ नौकर था। इसलिए बेटे की भी परव-रिश करनी चाहिए।

यह आदेश सुनकर मन्त्री ने कहा—यदि आज्ञा हो तो इसे गाँव के मुख्य द्वार पर चौकीदार नियत कर दिया जाय। गाँव में जो गाड़ियाँ आती हैं, उनसे एक-एक पैसा कर लिया जाता है। यह साधारण काम है, आसानी से कर सकेगा। आए हुए पैसे इससे नित्य वसूल करने के लिए खज़ाञ्ची नियत कर दूँगा

मन्त्री का यह विचार राजा को भी पसन्द आया। उन्होंने स्वीकृति दे दी।

नौकरी का स्वप्न

इसके पश्चात् मन्त्री ने मूर्खराज से कहा—तुझे दस रुपए मासिक पर बड़े दरवाज़े का चौकीदार नियत किया गया है। कल से तुझे वहाँ जाकर बैठना चाहिए, और जो बाहर से गाड़ियाँ आएँ, उनसे प्रति गाड़ी एक पैसा वसूल करना चाहिए। जो गाड़ियाँ गाँव से बाहर जायँ, उनसे कुछ न लिया जाय।

यह आज्ञा सुनकर मूर्खराज के आनन्द का पार न था। 'जो हुकुम' कहकर वे ख़ुश होते हुए घर आए। भोजन कर सो गए। परन्तु उन्हें बार-बार यह याद आता रहा कि राजा ने मुझे चौकीदार बना दिया है। इससे नींद उचट गई। इसी प्रकार विचारों के दौर में पिछली रात बीत गई, तो भी उनके विचार ख़त्म न हुए। इस प्रकार विचार करते-करते उन्हें सूझ पड़ा कि अब क्या चिन्ता है? अब तो मैं चौकीदार हो गया हूँ। सब गाड़ी वालों पर हुकूमत करूँगा। अगर कोई मेरा हुकुम न मानेगा, तो खींच कर ऐसी लात मारूँगा कि वह गाँव के बाहर जा गिरेगा। यह विचार करते-करते मूर्खराज ने जो लात चलाई, तो पास रक्खे हुए पानी के घड़े में पड़ी। घड़ा फूट गया। बिस्तर भीग गया और आपने भी अर्द्ध-स्नान कर लिया।

चुङ्गी

इसके बाद मूर्खराज खाने-पीने से निबट कर बड़े रोब से दरवाज़े पर जा बैठे। जो गाड़ी गाँव में आती उससे एक-एक पैसा वसूल करते। परन्तु जो गाड़ी गाँव से वापस जाती, उससे कुछ नहीं लेते, क्योंकि उनसे वसूल करने के लिए सरकारी आज्ञा नहीं थी। इसलिए उनसे कुछ न लेकर उलटे एक-एक पैसा उन्हें दे देते। मूर्खराज ने सोचा था कि जब बाहर से आने वाली गाड़ियों से एक-एक पैसा वसूल किया जाता है तो बाहर जाने वाली गाड़ियों को एक-एक पैसा देना भी चाहिए। इस ख्याल से वे जाने वाला प्रत्येक गाड़ी को एक-एक पैसा देने लगे। इस प्रकार शाम हो गई। जब लौटने लगे, तो पास में एक पैसा भी नहीं बचा था। रात को जब दरबार में पहुँचे, तो ख़ज़ाञ्ची ने चुङ्गी के रुपए माँगे। मूर्खराज ने उत्तर दिया—ख़ज़ाञ्ची साहब, आज तो कुछ भी आमदनी नहीं हुई।

यह सुनकर ख़ज़ाञ्ची बहुत खीझे और मूर्खराज को राजा के सामने पेश किया। कहा—सरकार, यह आज की आमदनी बिलकुल नहीं बतलाता। क्या दिन भर में गाँव में एक भी गाड़ी न आई होगी?

मूर्खराज की सफ़ाई

राजा ने मूर्खराज से पूछा—तू आज की आमदनी क्यों नहीं बतलाता ?

मूर्खराज बोले—सरकार, जब आज एक पैसे की भी आमदनी नहीं हुई तब मैं क्या बतलाऊँ।

राजा ने कहा—क्या आज दिन भर में एक भी गाड़ी गाँव में नहीं आई ?

मूर्खराज बोले—नहीं सरकार, गाड़ियाँ तो बहुत आई है, बहुत गई हैं।

राजा ने पूछा—तब यह कैसे कहता है कि एक पैसे की भी आमदनी नहीं हुई। जब बहुत गाड़ियाँ आईं और गईं, तो आमदनी बतलाता क्यों नहीं ? क्या सब रुपए हज़म कर जाना चाहता है ? जा, ख़ज़ाञ्ची साहब के पास जमा कर दे। नहीं तो बाँधकर पीटा जायगा।

राजा की इस धमकी से मूर्खराज काँप उठे, डरते-डरते बोले—सरकार, मुझे पिटवाइएगा नहीं, मैंने आपकी एक भी पाई नहीं खाई है। ज़रा मुझ पर दया करके मेरी सब बातें सुन लीजिए।

राजा ने पूछा—बोल, क्या कहना चाहता है ?

मूर्खराज ने कहा—सरकार जितनी गाड़ियाँ गाँव में आईं उतनी ही वापस गईं। आने वाली गाड़ियों से मैंने एक-

एक पैसा लिया तो जाने वाली गाड़ियों को एक-एक पैसा दे भी दिया। यही न्याय भी था। सरकार की भी यही आज्ञा थी कि जाने वाली गाड़ियों से कुछ न लिया जाय। मैंने उन्हें एक-एक पैसा दे दिया, लिया कुछ नहीं सरकार! ऐसी दशा में क्या बचता।

मूर्खराज की यह बात सुनकर राजा को बड़ा दुख हुआ, बड़ा आश्चर्य हुआ, मन ही मन हँसी भी आई। कहने लगे—मैंने इसकी दशा पर ख़याल करके एक मामूली सी नौकरी दिला दी, मूर्ख उसे भी अच्छी तरह नहीं कर सका। इसलिए अब ऐसा उपाय करना चाहिए कि यह किसी तरह सुधर जाय। यदि ऐसा न किया जायगा तो यह मूर्ख किसी दिन बेमौत मर जायगा। इसलिए किसी प्रकार इसे मार्ग पर लाना चाहिए। यह निश्चय कर राजा ने सोचा कि यह अकेला है, इसलिए बहुत बहका करता है, यदि इसका विवाह होजाय, घर में औरत आ जाय, तो यह सब मूर्खता भूल जाय। यह सोचकर राजा ने एक सजातीय ग़रीब विधवा से उसका पुनर्विवाह करने का प्रबन्ध किया।

मूर्खराज का विवाह

राजा ने उस विधवा को बुलाकर बहुत-कुछ समझाया-बुझाया, परन्तु वह विवाह के लिए राज़ी नहीं हुई। उसने कहा—सरकार, मुझे क्षमा किया जाय। किस बैल के पल्ले आप मुझे बाँधते हैं। वह जैसा बुद्धिमान् है, आपको सब मालूम ही है, इसलिए कैसे निभेगा, कैसे घर चलेगा?

राजा ने कहा—तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो। तुम लोगों के सुख से खाने-पीने का प्रबन्ध मैं कर दूँगा।

अन्त में राजा के बहुत आग्रह से उसने स्वीकार कर लिया। दो-तीन रोज़ के बाद ही बड़े ठाठ-बाट से मूर्खराज का विवाह हो गया। उनकी स्त्री का नाम था लक्ष्मी।

मूर्खराज की गृहस्थी

विवाह के दूसरे रोज़ राजा ने लक्ष्मी देवी को बुलाकर पाँच सौ रुपए दिए और कहा—इन रुपयों से कुछ तो गृहस्थी का सामान मँगाना, कुछ रुपए बचा छोड़ना और बाक़ी रुपयों से दो-तीन भैंसें ख़रीदना। उनसे जो दूध-दही, घी वग़ैरा होगा, उन्हें बेचकर अपना ख़र्च चलाना। इस काम में तुम्हें किसी की सहायता की आवश्यकता न होगी। तुम अकेली कर सकोगी। मूर्खराज भी आनन्द से दिन बिताएँगे। परन्तु देखो, उसे इस व्यवसाय का भेद मत बतलाना।

समझा-बुझाकर राजा ने उसे जाने की आज्ञा दी। वह अपने घर चली आई।

परन्तु वह बेचारी बड़ी भोली थी। मूर्खराज ने उससे राजा के बुलाने का कारण पूछा। उसने रुपयों की पोटली सामने रखकर सब हाल कह सुनाया। मूर्खराज बड़े ख़ुश हुए। कहने लगे—ठीक है, ऐसा ही किया जायगा।

इस प्रकार निश्चय करके लक्ष्मी देवी बोलीं—तो कल सवेरे मैं अपने पीहर जाऊँगी। वहाँ और तो कोई नहीं है, मेरे चाचा हैं। वे मुझे अच्छी भैंसें देखकर दिलवा देंगे।

मूर्खराज बोले—बड़ी अच्छी बात है। राज़ी से जाना।

इस प्रकार के निश्चय के बाद दोनों ने खाया-पिया

और सो गए। दूसरे दिन प्रातःकाल भोजनादि से निबट कर लक्ष्मीदेवी अपने पीहर की ओर चलीं। वह गाँव अनन्तपुर से कोई दो-तीन कोस पर था। गाँव में पहुँचकर लक्ष्मी देवी अपने चाचा से मिलीं और आने का सब हाल कह सुनाया। वे खुश हुए। कहने लगे—तू जो इस मूर्ख के घर बैठ गई है, इसे जात-बिरादरी के लोग अच्छा नहीं कहते। परन्तु जब राजा की आज्ञा से तूने ऐसा किया है, तो ठीक है। कोई हर्ज नहीं। यह सुनकर मुझे और भी आनन्द हुआ कि राजा तुम पर कृपा रखते हैं। तुम सुख से दिन बिताओगी। मैं तुझे अच्छी भैंसें देखकर दिला दूँगा। परन्तु यह काम जल्दी नहीं हो सकता। मैं आस-पास के गाँवों में तलाश कराऊँगा और देखकर अच्छी भैंसें दिलाऊँगा। आज तो तुम खा-पीकर घर जाओ, जब तलाश करा लूँगा, तब तुम्हें सूचित करूँगा। तुम रुपए लेकर आ जाना।

लक्ष्मी ने खाया-पिया और शाम को घर जाने के लिए तैयार हुई। पास-पड़ोसियों ने देखा, तो कुशल-मङ्गल पूछा। लक्ष्मी ने सब हाल सुनाया। सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। कहने लगे—बहिन, कभी छाछ भी खिलाओगी या नहीं?

लक्ष्मी ने कहा—भैया, तुम्हें ही न खिलाऊँगी, तो किसे खिलाऊँगी? यह कहकर वह गाँव की ओर चल दी। चलते-चलते उसके मन में विचार आया कि भैंसें तो चाचा जी

दिलवा ही देंगे, इसलिए छाछ के मटकों का प्रबन्ध इसी गाँव में कर लेना चाहिए; क्योंकि यहाँ के मटके बड़े मज़बूत और सुन्दर होते हैं। यह विचार कर वह कुम्हारों के यहाँ गई और कुछ मटके बना देने की सूचना देकर घर लौट आई।

मूर्खराज का क्रोध

घर आने पर मूर्खराज ने पूछा—क्यो, भैंसों का क्या प्रबन्ध किया ? लक्ष्मी ने सब कथा कह सुनाई और हँसते-हँसते कहा—मेरे पीहर के लोगों ने तो छाछ के लिए मुझे अभी से निमन्त्रण दे दिया है। बेचारे मुझ पर बड़ा स्नेह रखते हैं। मुझे देखते ही बड़े .खुश हुए।

मूर्खराज ने पूछा—तो क्या तूने छाछ देना स्वीकार कर लिया ?

लक्ष्मी ने हँसते-हँसते कहा—तो क्या मैं उनसे इन्कार करती ?

यह सुनकर मूर्खराज बहुत चिढ़ गए, उन्होंने खूब गालियाँ दीं और कहने लगे—अभागिन, चुड़ैल कहीं की, इस तरह सब छाछ लुटा दी जायगी, तो पैसा काहे से मिलेगा ?

यह कहकर मूर्खराज ने लात-घँसों से लक्ष्मीदेवी की खूब ही पूजा की। पूजा से प्रसन्न होकर लक्ष्मी देवी ने करुण स्वर में ग्राम्य गीत शुरू कर दिया। लक्ष्मीदेवी ज्यों-ज्यों गीत का स्वर बढ़ाने लगीं, त्यों-त्यों मूर्खराज भी सच्चे दिल से पूजा करने लगे। गीत और पूजा के तीव्र स्वर को सुनकर पड़ोस के लोग इकट्ठे होगए। कहने लगे—क्यों बे मूर्ख, बेचारी को क्यों मार रहा है ?

मूर्खराज चिढ़कर बोले—इस चुड़ैल को मारा नहीं जायगा, तो क्या पूजा की जायगी ? नालायक़ ने मेरी सब छाछ अपने पीहर वालों को दे डाली। अब रोज़गार काहे से किया जायगा ?

मूर्खराज की बातें सुनकर सब लोग हँस पड़े और कहने लगे—अबे मूर्ख, अभी तो भैंसें ख़रीदी ही नहीं, छाछ कहाँ से आ गई ? और दे कैसे डाली। व्यर्थ ही अपनी बेवक़ूफ़ी ज़ाहिर करता है ?

सब लोग उसे समझा-बुझाकर अपने-अपने घर चले गए।

औरत के पैर दाबे

लक्ष्मीदेवी पिट कर एक ओर सो रहीं। मूर्खराज भी सो गए। परन्तु उन्हें मारे पश्चात्ताप के नींद नहीं आई। वे अपने मन में कहने लगे—मैंने बेचारी को व्यर्थ ही मारा। परन्तु इसमें मैं क्या करूँ, मेरा क्या दोष था? उसने जब सब छाछ दे दी, तो मुझे क्रोध आगया। परन्तु बेचारी को बड़ी चोट आई होगी। अब ज़रा उसके हाथ-पैर दबा दूँ, शरीर में तैल मल दूँ। यह सोच कर उन्होंने एक कटोरी में तैल लिया, और लक्ष्मीदेवी के पैताने बैठ गए। पर दाबने लगे, और तैल मलने लगे। लक्ष्मीदेवी गहरी नींद में सो रही थीं। मूर्खराज ने जब खूब ज़ोर-ज़ोर से तैल मलना शुरू किया, तो वह जाग पड़ीं और अपने पैरों पर किसी को हाथ फेरता देख कर बोलीं—अरे, तू कौन है?

मूर्खराज ने कोई उत्तर न दिया। और भी ज़ोर-ज़ोर से तैल मलना शुरू कर दिया। लक्ष्मीदेवी ने घबराकर अपने पैर खींचे, मूर्खराज ने कसकर पकड़ लिए। घर में अन्धकार था। इसलिए मूर्खराज का चेहरा लक्ष्मीदेवी न पहचान सकीं। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला उठीं—दौड़ो, दौड़ो, चोर है, चोर है।

लक्ष्मीदेवी की चिल्लाहट सुनकर पड़ोस के लोग दौड़ आए। किन्तु किवाड़ बन्द थे, इसलिए किवाड़ उतार कर वे

अन्दर घुसे। यह देखकर मूर्खराज ने भागना चाहा, लोगों ने तुरन्त पकड़ लिया। अन्धकार में कुछ सूझता तो था नहीं कि ये कौन हैं। इसलिए मूर्खराज की खूब ही पिटाई की। पिटते-पिटते वे अधमरे हो गए।

प्रेम का बदला मार

मूर्खराज बहुत ही चिल्लाए कि "ये तो मैं हूँ, मैं हूँ, मुझे क्यों मारते हो।" परन्तु रात का वक़्त था और आदमी भी बहुत थे। किसी ने इनकी बात नहीं सुनी। ख़ूब ही पीटा। इसी बीच लक्ष्मीदेवी ने दिया जलाया और उजाले में चोर का मुँह देखा तो मूर्खराज निकले। लोगों ने भी उन्हें देखकर छोड़ दिया और पश्चात्ताप करने लगे कि हमने बेचारे को बग़ैर देखे ही पीट डाला। इस तरह पश्चात्ताप करते हुए सब लोग अपने घर चले गए। प्रातःकाल हुआ तो मूर्खराज और लक्ष्मीदेवी की नींद खुली। दोनों जने कुट-पिटकर चकनाचूर हो गए थे। लक्ष्मीदेवी ज़रा होशियार थी। उसने गरम पानी से मूर्खराज को स्नान कराया, ख़ुद भी किया। शरीर में ज़रा शक्ति आ गई। भोजन बनाया, खाया। चार-पाँच दिन में लक्ष्मी के चाचा का सन्देश आया कि मैंने तुम्हारे लिए तीन भैंसें तय कर ली हैं। प्रति भैंस का मूल्य ७५) रुपया है। इसलिए सवा दो सौ रुपए लेकर तुरन्त आओ। लक्ष्मीदेवी रुपए लेकर गई। भैंसें और छाछ के मटके लेकर शाम को लौट आई। भैंसें बड़ी मोटी-ताज़ी थीं। देखकर मूर्खराज प्रसन्न हो गए। सोचने लगे, अब क्या है, ख़ूब दही, घी और मक्खन खाने को मिलेगा।

मूर्खराज इस प्रकार मन के लड्डू खाने लगे। बेचारी

लक्ष्मीदेवी भैंसों के दाने-घास के प्रबन्ध में लग गई। रोज़ दूध वग़ैरा बेचकर अपना और अपने पति मूर्खराजका गुज़र करने लगी। कभी तो दूध ही बेच देती, और कभी अच्छे टके न मिलते तो दही जमाकर मक्खन निकालने का प्रबन्ध करती। इस काम में वह अपनी किसी पड़ोसिन की सहायता ले लेती। मूर्खराज को पता न लगने देती। क्योंकि वह जानती थी कि मालूम होगा तो वे फिर ऊधम मचा छोड़ेंगे, परन्तु वास्तव में मूर्खराज को कोई ध्यान न था। वे दूध-दही खाते और आनन्द से घूमते। आजकल मोटे-ताज़े भी ख़ूब हो गए थे। बेचारी लक्ष्मी के सिर सब झंझटें थीं। वह सब भुगत लेती, कभी कोई बात मूर्खराज से न कहती। कहने जाती तो फिर प्रसाद मिलता, पूजा होती। बेचारी को राजा की कृपा से सब सुख था, केवल मूर्ख पति मिलने का ही एक दुख था।

बहुत दिन बीत गए। एक दिन लक्ष्मीदेवी फ़ुरसत पाकर शाम के समय अपने चबूतरे पर बैठी हुई थी। पड़ोसियों के बाल-बच्चे भी पास ही खेल रहे थे। उन्हें देखकर लक्ष्मीदेवी के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि मेरे पड़ोसी कैसे भाग्यवान् हैं कि इनके बाल-बच्चे भी हैं, और सब प्रकार का सुख है। मैंने न जाने अगले जन्म में कौन से पाप किए थे कि न तो अच्छा पति मिला, न बाल-बच्चे हुए, न पीहर में ही कोई बचा, मैं कैसी अभागिन हूँ। इस प्रकार के विचार से

लक्ष्मी को बड़ा दुख हुआ, छाती भर आई, आँखों से आँसू बहने लगे। इससे चबूतरे पर से उठकर वह घर में आ गई और कोने में बैठकर रोने लगी। ज्यों-ज्यों विचार करती थी, त्यों-त्यों उसका रोना बढ़ता जाता था। इस प्रकार रोते-रोते शाम हो गई। मूर्खराज भी घूम-फिरकर घर आए। घर में आकर देखा तो रोना-धोना मचा हुआ था। यह देखकर मूर्खराज बोले—क्यों रो रही हो ? क्या दुख है ? सिर-विर में तो दर्द नहीं हो रहा है ?

बालक की चाह

बेचारी लक्ष्मी ने उत्तर दिया—मेरा सिर-विर तो कुछ नहीं दुखता, ऐसे ही एक विचार आ गया, जिससे रोने लगी।

मूर्खराज ने पूछा—ऐसा क्या विचार आया, जिससे रोने लगी? भैंसों ने कहीं दूध-वूध तो कम नहीं किया?

मूर्खराज की यह बात सुन कर लक्ष्मी ने हँसते-हँसते कहा—तुममें कुछ समझ तो है नहीं, व्यर्थ में ही सिर-पच्ची किया करते हो। भैंस के दूध कम देने से भी कोई रोता है?

मूर्खराज बोले—तब क्यों रोती हो?

लक्ष्मी ने उत्तर दिया—तुम्हें कैसे समझाऊँ, शाम को मैं चबूतरे पर बैठी हुई थी, पड़ोसियों के बच्चे पास ही खेल रहे थे। उन्हें देखकर मन में विचार हुआ, इस प्रकार के दो बच्चे मेरे घर में भी होते, तो आज कितना सुख होता? परन्तु मुझ अभागिन को एक बालक भी नसीब न हुआ।

मूर्खराज ने अपना नसीब दिखाते हुए कहा—अरी, तुझे नसीब नहीं हुआ तो मुझे कहाँ नसीब हुआ है? देखती नहीं इस सिर को?

मूर्खराज की यह बुद्धिमानी देखकर लक्ष्मी चिढ़ गई। कहने लगी—तुममें बुद्धि का नाम नहीं है, व्यर्थ ही झक-

झक किया करते हो। हटो यहाँ से। तुममें बुद्धि ही होती तो क्या था।

मूर्खराज ने कहा—अच्छा, अब तुम जो बताओ सो मैं करूँ, परन्तु रोओ मत। मुझे दुख होता है।

लक्ष्मी बोली—यदि सचमुच तुम्हें दुख होता हो तो किसी देवता की मन्नत करो कि अपने एकाध बालक हो।

मूर्खराज ने कहा—ठीक है, मैं कल प्रातःकाल ही स्नान करके किसी देवता से प्रार्थना करूँगा, मन्नत मनाऊँगा। तुम किसी तरह की चिन्ता न करो।

मन्नत

प्रातःकाल होते ही मूर्खराज ने स्नान किया और सूर्य के सामने खड़े होकर मन्नत करने लगे। मन्नत इतनी मूर्खतापूर्ण थी कि हम उसका उल्लेख नहीं कर सकते। मूर्खराज की मन्नत मूर्खतापूर्ण हो, इसमें क्या आश्चर्य है? लेकिन मूर्खराज थे भाग्यवान्। आखिर लक्ष्मी गर्भवती हुई। मूर्खराज बड़े खुश थे। लक्ष्मी भी फूली न समाती थी। मूर्खराज बाहर निकलते तो लोग चिढ़ाते कि—"अबे, तेरे लड़का होगा, वह तुझे चाचा कहेगा। छिः छिः कैसी शरम की बात है।" मूर्खराज चिढ़कर उत्तर देते—अगर वह साला मुझे चाचा कहेगा तो मैं भी उसे चाचा कहूँगा। यह सुन कर लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते।

SPS
808.831 P 75 M
5762

मन्नत पूरी हुई

दो मास हुए, लक्ष्मी की कोख से सुन्दर बालक पैदा हुआ। बालक का मुख देखकर लक्ष्मी बड़ी सुखी हुई। एक दिन उसे याद आया कि मेरे पति ने जो मन्नत मनाई थी, ईश्वर-कृपा से वह पूरी हुई। इसलिए अब उसे उतारना चाहिए। देवता का क़र्ज़ माथे पर रखना ठीक नहीं। लक्ष्मी ने मूर्खराज से कहा। मूर्खराज ने कहा कि मैं प्रातःकाल ही जाकर मन्नत उतार आऊँगा। ज्यों-त्यों करके प्रातःकाल हुआ। लक्ष्मी से कुछ पैसे लेकर मूर्खराज बाज़ार गए। सवा सेर मिर्चियाँ ख़रीदीं और नदी की ओर चल दिए। नदी में नहाए-धोए, और एक ब्राह्मण को बुलाया। बोले—महाराज, मैंने एक ब्राह्मण को सवा सेर मिर्चियाँ खिलाने की मन्नत की थी। इसलिए आप खायँ तो बड़ा अच्छा हो।

ब्राह्मण देवता बड़े बने हुए थे। सोचा—मूर्ख मेरा ही फ़ैसला करने के लिए आया है।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—भाई, मैंने भी मन्नत की है कि जो मूर्ख मेरे पास मिर्चियाँ लेकर आएगा, मैं उसे सवा सेर मिर्चियाँ खिलाऊँगा। उसकी काया सोने की हो जायगी। इसलिए तुम मिर्चियाँ खा लो तो सोने के हो जाओगे।

मूर्खराज ने यह बात सुनी तो बड़े ख़ुश हुए। ज्यों-त्यों करके सब मिर्चियाँ खा गए। किसी तरह घर आते ही नाक

और मुँह से खून बहने लगा। लक्ष्मी ने सब क़िस्सा सुना, तो तुरन्त अच्छे-अच्छे वैद्यों को बुलवाया, परन्तु कोई उपाय काम नहीं आया। मूर्खराज तीन दिन कष्ट उठाकर इस दुनिया से चल बसे। लक्ष्मी बहुत रोई-धोई, पर इससे क्या होता था। आख़िर वह अपने बालक पर ही आशा-भरोसा रखकर अपना जीवन बिताने लगी। पति का क्रिया-कर्म करने के बाद लक्ष्मी ने बालक का नामकरण करवाया। बालक का नाम चतुरशिरोमणि रक्खा गया। यह बालक अपने नाम के अनुसार ही था। मूर्खराज-जैसे मनुष्य के बुद्धिमान् बालक का उत्पन्न होना ईश्वर की एक लीला ही थी। इस बालक ने आगे चलकर अपनी चातुरी और बुद्धिमत्ता से बड़ा यश प्राप्त किया।

समाप्त